वुस्अ़ते इ़ल्मे मुस्तफ़ा और अ़क़ीदा इ़ल्मे ग़ैब





कुरान व अहादीस की रौशनी में

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

वुस्अ़ते इ़ल्मे मुस्तफ़ा और अ़क़ीदा इ़ल्मे ग़ैब

(कुरान व अहादीस की रोशनी में)

मुअ़ल्लिफ़

डा०–आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

नाम किताब– **वुस्अ़ते इ़ल्मे मुस्तफ़ा और अ़क़ीदा इ़ल्मे ग़ैब**

मुअ़ल्लिफ़–**डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी**

सने इशाअ़त–अगस्त–**2021**

कम्पोज़िंग–**जुनैद अ़ली क़ादरी सफ़वी & ज़ैनुल आ़बदीन क़ादरी सफ़वी**

क़ीमत– **90/-** रुपये

–: मिलने के पते :–

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरुदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद :-

अल्लाह तबारक व तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब है और उसका इ़ल्म ज़ाती है और हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का इ़ल्मे ग़ैब अ़ताई है और नबी का माअ़ना जो ग़ैब की ख़बरें जानता हो और लोगों को मुत्तलाअ़ करता हो यानी ग़ैब की ख़बरें जानने वाला और ग़ैब की ख़बरें देने वाला और नबी का कुल इ़ल्म ग़ैब ही होता है अल्लाह तआ़ला अपने मुन्तख़ब बन्दों और रसूलों को इ़ल्मे ग़ैब पर मुत्तलाअ़ फ़रमां देता है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का इ़ल्मे ग़ैब अ़ताई इ़ल्मे ग़ैब है

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने प्यारे हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को वो वुस्अ़ते इ़ल्म अ़ता फ़रमाया जो किसी भी नबी व रसूल को अ़ता नहीं हुआ और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को ज़मीनो आसमान के तमाम उ़लूम व हिकमतों का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया व लोगों के क़ल्बी अहवाल व कैफ़ियात और पोशीदा बातों का इ़ल्म और मुनाफ़िक़ीन की हालते निफ़ाक़ व मक्रो फ़रेब का इ़ल्म व अहकामे शरीअ़त और दीनी उमूर का इ़ल्म और माज़ी, हाल व मुस्तक़बिल के ज़मानों के अहवाल व वाक़आ़त का इ़ल्म और क़यामत तक ज़ाहिर होने वाले तमाम अहवाल व मख़्फ़ी राज़ों-

का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया है हत्ता कि आसमानों के ऊपर जो भी मख़लूक़ात हैं उन सब का इ़ल्म व ज़मीनों के नीचे जो कुछ मौजूद है यानी कायनात की हर शैः का इ़ल्म आप को अ़ता किया गया और आप के पास इ़ल्मे ग़ैब के बे शुमार ख़ज़ाने हैं और कुरान भी आपके इ़ल्मे ग़ैब में शामिल है

अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्म में फ़र्क़ ये है कि रब तआ़ला का इ़ल्म ग़ैर महदूद है और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का इ़ल्म महदूद है और अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म को फ़ना नहीं और मख़लूक़ का इ़ल्म फ़ना होना मुम्किन है और अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म ज़ाती है और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का इ़ल्म अ़ताई है और अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म के मुक़ाबले में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का इ़ल्म जुज़ है मगर तमाम मख़लूक़ के मुक़ाबले में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का इ़ल्म कुल है अल्लाह तआ़ला अपने अम्बिया, औलिया व सालिहीन और अपने महबूब व मुक़र्रब बन्दों में से जिसे जितना चाहता है उसे उतना इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाता है

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का मरातिबे इ़ल्मे ग़ैब कुल कायनात में सबसे अरफ़ाअ़ (निहायत बुलन्द) व आअ़ला है जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता कि रब

तआ़ला ने अपने महबूब को कितना इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और इन्सान की अ़क़्लें उसका इदराक नहीं कर सकतीं।

बाअ़ज़ बद अ़क़ीदा लोग कहते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को इ़ल्मे ग़ैब नहीं था और कुरान मजीद की सू०-लुकमान की आयत को बतौर दलील पेश करते हैं ''कि बेशक अल्लाह ही के पास क़यामत का इ़ल्म है और वही बारिश उतारता है और जो कुछ रहमों में है वो ही जानता है और कोई शख़्स ये नहीं जानता कि वो कल क्या अ़मल कमायेगा और न कोई शख़्स ये जानता है कि वो किस ज़मीन पर मरेगा बेशक अल्लाह खूब जानने वाला है ख़बर रखने वाला है। (सू०-लुकमान-31/34)

तो इसका जवाब ये है कि बेशक अल्लाह तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब है और वो अपनी ज़ात व सिफ़ात में अकेला ख़ालिक़ व मालिक है न कोई उसकी मिस्ल न कोई मिसाल और न कोई उसकी इब्तिदा और न कोई इन्तिहां वही अव्वल है वही आख़िर है व कायनात की हर शैः उसके ताबेअ़ फ़रमान है वो अम्रे कुन से कायनात की हर शैः को अ़दम से वुजूद में लाने की कुदरत रखता है मगर वो अपने मख़सूस व महबूब और मुक़र्रब बन्दों और रसूलो में से जिस शैः के मुताअ़ल्लिक़ चाहता उसे इ़ल्मे ग़ैब पर मुत्तलाअ़ फ़रमां देता है जो आयाते कुरआनी और अहादीस से साबित है

और जो चीज़ नसे क़तई से साबित हो उसका इन्कार गुमराही व बेदीनी और मुनाफ़िक़त की अ़लामत है आज अल्ट्रासाउन्ड के ज़रिये ये बता देते हैं कि अ़ौरत के पेट में लड़का है या लड़की और मौसम के जानकार बारिश और तूफ़ान के आने से पहले उसकी ख़बर दे देते हैं जबकि आयते करीमा के मुताबिक़ तो अल्लाह ही जानता है कि जो कुछ रहमों में है तो फिर डाक्टर को अ़ौरत के पेट में लड़का या लड़की होने का इ़ल्म कैसे हुआ आयते करीमा के मुताबिक़ तो अल्लाह ही जानता है कि बारिश कब होगी तो मौसम के जानकार ये कैसे बता देते हैं कि बारिश कब होगी तो माअ़लूम हुआ कि बेशक कायनात की हर शैः का इ़ल्म अल्लाह ही जानता है और वो हर शैः का इहाता किये हुये है और हर शैः उसके क़ब्ज़े कुदरत में है और हर शैः का वो मालिको मुख़्तार है और उसके इ़ल्म में कायनात की हर पोशीदा व ज़ाहिर शैः का इ़ल्म है मगर वो जिसे जितना चाहता उसे उतना इ़ल्म अ़ता फ़रमां देता है

इसी तरह क़यामत का इ़ल्म अल्लाह ही को माअ़लूम है मगर उसने अपने हबीब को क़यामत का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया मगर हुजूर अ़लैहिस्सलाम ने हिकमते इलाही के सबब इसे मख़्फ़ी रखा इसी तरह बाअ़ज़ दीगर उ़लूम भी हिकमतों के तहत पोशीदा रखे गये जिन्हें आप ने ज़ाहिर न किया।

फ़क़ीर–डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
09897626182, 09045442223

–: इ़ल्मे ग़ैब कुरान की रौशनी में :–

बिला शुबा अल्लाह तबारक व तअ़ाला आ़लिमुल ग़ैब है और उसने अपने अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) और बिल खुसूस रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ग़ैब से मुताअ़ल्लिक़ लाखों करोड़ों चीज़ों का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया व सब फ़रिश्तों और अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) से ज़्यादा अपने हबीब (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को इ़ल्म अ़ता फ़रमाया मगर अल्लाह तबारक व तअ़ाला और उसके हबीब (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब में फ़र्क़ ये है कि अल्लाह तअ़ाला का इ़ल्म क़दीम और ग़ैर मुतनाही है और नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का इ़ल्म हादिस व मुतनाही है अल्लाह तबारक व तअ़ाला का इ़ल्म अज़ खुद और बे ताअ़लीम है और हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का इ़ल्म अ़ताये इलाही व उसकी ताअ़लीम से है।

बेशक कुरान लौहे महफूज़ की तफ़्सील है 'मा काना वमा यकूनु' यानी जो हो चुका और जो आइन्दा होगा और दुनियाँ व आख़िरत में जो होने वाला है सब कुछ लोहे महफूज़ में लिखा हुआ है और जब कुरान में लौहे महफूज़ की पूरी तफ़्सील है तो जिसे कुरान मजीद के असरार में से कोई चीज़ अ़ता होगी उसे लौहे महफूज़ पर लिखा हुआ

जानने की हाजत नहीं बल्कि वो जो चाहे कुरान से ही माअ़लूम कर लेता है और लौहे महफ़ूज़ के उ़लूमे ग़ैब की कुरान तफ़्सील है और ज़र्रा व हर क़तरे की इसमें ख़बर है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

ये कुरान ऐसा नहीं है कि उसे अल्लाह (की वही) के बग़ैर गढ़ लिया गया हो लेकिन (ये) उन (सब किताबों) की तस्दीक़ (करने वाला) है जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं और जो कुछ (अल्लाह ने लौह में) लिखा है (ये) उसकी तफ़्सील है।
(सू०–यूनुस–10/37)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और आपके रब (के इ़ल्म) से एक ज़र्रा बराबर भी (कोई चीज़) न ज़मीन में पोशीदा है और न आसमान में और न उस ज़र्रे से कोई छोटी चीज़ है और न बड़ी मगर वाज़ेह किताब लौहे महफ़ूज़ में (दर्ज) है। (सू०–यूनुस–10/61)

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने कायनात की हर शैः का इ़ल्म कुरान मजीद में जमाअ़ फ़रमां दिया और ज़मीन व आसमान में कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जिसका इ़ल्म कुरान में न हो ख़्वाह वो खुश्क हो या तर हो या इन दोनों से मुख़्तलिफ़ हो और ज़मीन व आसमान के जमादात व नबातात और इन्सान व जिन्न और शजर व हजर और जानवर चरिन्दे परिन्दे और हर जानदार व बेजान शैः व–

जुमला तमाम मख़्लूक़ात ख़्वाह वो ज़मीन के ऊपर हो या ज़मीन के नीचे और आसमान के ऊपर हो या आसमान के नीचे इन सब का इ़ल्म कुरान में मौजूद है लेकिन ये उ़लूम व मआ़रिफ़ का इदराक उसी का होता है जिसे अल्लाह तबारक व तआ़ला इसकी तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये व उसे इ़ल्मो फ़हम व दानाई से सरफ़राज़ फ़रमाये।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और हमने आप पर वो अ़ज़ीम किताब नाज़िल फ़रमाई है जो हर चीज़ का वाज़ेह बयान है और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत और बशारत है। (सू०-नह्ल-16/89)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(और) हमने किताब (कुरान) में कोई चीज़ ऐसी नहीं छोड़ी (जिसे सराहतन या इशारतन बयान न कर दिया हो) (सू०-अनआ़म-6/38)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और न कोई तर चीज़ है और न ही कोई खुश्क चीज़ मगर रोशन किताब में (सब कुछ लिख दिया गया है) (सू०-अनआ़म-6/59)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(कुरान) हर शैः का तफ़्सीली बयान है।
(सू०-युसूफ़-12/111)

कुरान हर शैः का तिबयान है और तिबयान उस रौशन और वाज़ेह बयान को कहते हैं जो अस्लन पोशीदगी न रखे और ‘‘शैइन’’ हर मौजूदात को कहते हैं तो इसमें जुमला मौजूदात दाख़िल हो गये फ़र्श से अ़र्श तक और शर्क़ से ग़र्ब तक हर शैः का रौशन व तफ़्सीली बयान कुरान में मौजूद है और कायनात में कोई ऐसी चीज़ नहीं कि जिसे अल्लाह तआ़ला ने कुरान में बयान न फ़रमाया हो और इस आयत में ‘‘कुल’’ का लफ़्ज़ उ़मूम पर हर नस से बढ़कर नस है।

तो माअ़लूम हुआ कि कुरान मजीद वो अ़ज़ीमुश्शान किताब है जो तमाम उ़लूम व फुनून की जामेअ़ किताब है यानी इब्तिदाये कायनात से क़यामत तक कोई ऐसी शैः नहीं कि जिसका ज़िक्र कुरान में मौजूद न हो और जो कुरान में नहीं वो कायनात में नहीं है और यही बात अहादीस और बुजुर्गाने दीन के अक़वाल में भी बयान की गई है

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से सुना कि आपने फ़रमाया कि अल्लाह की किताब कुरान जिसमें तुमसे पहले के वाक़आ़त की भी ख़बर है और तुमसे बाद के वाक़आ़त की भी है और हुक्म है तुम्हारे दरमियान का यानी जो मुआ़मलात तुम्हारे माबैन हों।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/555-ह०–2906)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि जो इ़ल्म चाहे वो कुरान को लाज़िम करले क्योंकि इसमें अव्वलीन व आख़िरीन की सब ख़बरें हैं।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–11/33-ह०–36989)

ऐ नबी मुकर्रम हमने आप पर ऐसी अ़ज़ीम अज़ली, अबदी, दायमी, किताब नाज़िल फ़रमाई है जो तमाम कायनात की हर ज़ाहिर और पोशीदा और ज़मीनी व आसमानी और अ़र्शी व फ़र्शी व इन्सानी व हैवानी और मलाकूती, जिन्नाती, रुहानी और अव्वली व आख़िरी व शरीअ़त की, तरीक़त की, हक़ीक़त की, माअ़रिफ़त की, दीनी व दुनियाँ की, हराम व हलाल, इ़ल्म व अ़क़्लो फ़हम, और आअ़माल व अक़ायद और तमाम चीज़ों का बयान व इज़हार लेकर आने वाली किताब है और इस किताब के तमाम उ़लूम व फुनून को पढ़ने और समझने के लिये अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जैसा फ़हीम, नसीम, लईक़, लतीफ़, रफ़ीक़, मुज्तबा, क़सीम, वसीम व करीम नबी पैदा फ़रमाया और कुरान को पढ़ाने के लिये खुद खुदा–ए–रहमान व रहीम ने इंतिहाई कमाले लुत्फ़ो करम नवाज़ी फ़रमाई इससे रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का इ़ल्मे कुल्ली साबित हुआ क्योंकि तमाम इ़ल्म कुरान में है और कुल कुरान आपके इ़ल्म में है।

कुरान मजीद में सारे उ़लूम व सारी चीजे़ं बयान कर दी गई हैं मगर हमारी अ़क्लो फ़हम में वो इस्तिताअ़त व सलाहियत नहीं है कि हम हर शैः को कुरान से निकाल सकें मगर रब तआ़ला जिसे जिस क़दर तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये वो उस क़दर उसमें से इ़ल्म हासिल कर लेता है रब तआ़ला ने अपने महबूब हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को ज़मीनो आसमान का मुशाहदा कराया और आपको जिस क़दर चाहा उस क़दर इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया और कुरान के तमाम उ़लूम व फुनून सिर्फ़ रब तआ़ला ही जानता है फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जानते हैं क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब को कुरान सिखाया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(वो) रहमान ही है जिसने (खुद अपने हबीब को) कुरान सिखाया। (सू०-रहमान-55/1,2)

तमाम मख़लूक़ में आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का कोई उस्ताज़ नहीं है बल्कि आप का इ़ल्म मख़लूक़ के वास्ते के बग़ैर अल्लाह तबारक व तआ़ला की अ़ता से है और अल्लाह तआ़ला ने सारा कुरान अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को सिखा दिया इसमें मुताशाबहात का इ़ल्म भी दिया गया क्योंकि जब अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सारा कुरान अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को-

सिखा दिया तो इस में मुताशाबहात का इ़ल्म भी आ गया कि ये भी कुरान पाक का ही हिस्सा है।

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने अपने महबूब हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को बराहे रास्त कुरान की ताअ़लीम दी और कुरान के ज़ाहिरी व मख़्फ़ी तमाम उ़लूम अपने हबीब को सिखा दिये और जब पढ़ाने वाला खुद खुदा हो और पढ़ने वाले मुस्तफ़ा हों और इ़ल्म अ़ता करने वाले की अ़ताओं की कोई इन्तिहां न हो इ़ल्म लेने वाले की वुस्अ़त व कुशादगी की कोई हद न हो तो फिर ये मुम्किन ही नहीं कि कायनात की कोई शैः का इ़ल्म मुस्तफ़ा के इ़ल्म में न हो और ऐसा ख़्याल बदअ़क़ीदगी व गुमराही की सरीह दलील है

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को तमाम अशिया के नाम सिखाये इरशादे बारी तअ़ाला है ''और अल्लाह ने आदम (अ़लैहिस्सलाम) को तमाम अशिया के नाम सिखा दिये'' (सू०-बक़राह-2/31) और हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को ज़िरह बनाना सिखाई ''और हमने तुम्हारे लिये दाऊद को ज़िरह बनाने का फ़न सिखाया ताकि वो तुम्हारी लड़ाई में तुम्हें ज़रर से बचायें'' (सू०-अम्बिया-21/80) व हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) को परिन्दों की ज़बान सिखाई जैसा कि हज़रत सुलेमान ने इज़हार करते हुये फ़रमाया ''ऐ लोगों हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है'' (सू०-नम्ल-27/16) व हज़रत ईसा

(अ़लैहिस्सलाम) को अल्लाह तआ़ला ने इ़ल्मे तिब व तौरात और इन्जील का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया "और अल्लाह उसे किताब व हिकमत व तौरात व इंजील (का इ़ल्म) सिखायेगा (सू०-आले इ़मरान -3/48) व हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) को इ़ल्मे लदुन्नी यानी असरार व माअ़ारिफ़ का इल्हामी इ़ल्म सिखाया था। (सू०-कह्फ़-18/65)

और अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को कुल कायनात की हर शैः का सब इ़ल्म अ़ता फ़रमाया यहाँ तक कि आप (अ़लैहिस्सलाम) को ज़मीनों आसमान की हर शैः का मुशाहदा कराया गया और आपको कुरान सिखाया गया जो हर उस चीज़ की तफ़्सील है जिसकी आपको ज़रुरत थी और आप अ़लैहिस्सलाम ने तमाम मख़लूक़ात की इब्तिदा से लेकर इन्तिहां तक की ख़बर दी हत्ता कि क़ब्र से दोबारा उठने और क़यामत के तमाम अहवाल और लोगों के जन्नत व दोज़ख़ में जाने की ख़बरें व जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होने वाला है उसका वाज़ेह बयान फ़रमाया आप (अ़लैहिस्सलाम) को ये भी इ़ल्म था कौन सी मख़लूक़ कब और कैसे पैदा हुई और दुनियाँ में कितना अ़रसा रही और उनके क्या आअ़माल थे और उनका क्या अंजाम हुआ और नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को अल्लाह तआ़ला ने ये भी इ़ल्म दिया था कि कौन जन्नती है और कौन दोज़ख़ी है और क़यामत तक वाक़ेअ़ होने वाले तमाम उमूर की ख़बर दी।

अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को तमाम उ़लूम व मआ़रिफ़ अ़ता फ़रमाये

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और अल्लाह ने आप पर किताबो हिकमत नाज़िल फ़रमाई और उसने आप को वो सब इ़ल्म अ़ता कर दिया जो आप नहीं जानते थे और आप पर अल्लाह का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।
(सू०–निसा–4/113)

इस आयते करीमा में ''मालम तकुन ताअ़लम'' में वो सब कुछ दाख़िल है जो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) नहीं जानते थे।

और इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उन लाखों अ़ताओं का ज़िक्र फ़रमाया दिया जो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को खुसूसी तौर पर अ़ता फ़रमाये गये और ''अल किताबा'' से मुराद कुरान मजीद है और हिकमत से मुराद वो अल्फ़ाज़ मुबारक हैं जो आपके मुँह मुबारक से बतौर हदीस निकले हैं क्योंकि उनके मज़ामीन भी अल्लाह तआ़ला की वही होते हैं और 'अ़ल्लमाका मालम तकुन ताअ़लम' से मुराद आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को वो सब इ़ल्म अ़ता कर दिया जो आप नहीं जानते थे यानी अहकामे शरअ़, उमूरे दीन व छुपी हुई चीज़ें और दिलों के असरार (पोशीदा बातें) और अगले और पिछलों–

की ख़बरें और ज़मीनो आसमानों की पोशीदा बातें और सारे उ़लूम व फुनून आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम को अ़ता किये गये यानी नुजूले वही या नुजूले कुरान या रब तआ़ाला के बताने से पहले आप जो कुछ न जानते थे वो सब आपको आपके रब ने अच्छी तरह खूब सिखा दिया।

चुनांचा सिखाने और बताने में बड़ा फ़र्क़ होता है क्योंकि किसी शैः का इ़ल्म बताने या सुनाने से इ़ल्म कामिल नहीं होता और सिखाने से इ़ल्म कामिल हो जाता है और इस आयते करीमा में फ़ज़्ल से मुराद उ़लूमे ग़ैब हैं क्योंकि फ़ज़्ल का माअ़ना ज़्यादती होता है और इस्तिलाह में फ़ज़्ल वो अ़तिया है जो इस्तिहक़ाक़ से ज़्यादा दिया जाये और रहमत के माअ़ने हैं मेहरबानी और यहाँ रहमत से मुराद जो बग़ैर इस्तिहक़ाक़ यानी बग़ैर तलबे हक़ के दी जाये मसलन मजदूर को उजरत से ज़्यादा दे दिया जाये ये ज़्यादती फ़ज़्ल है और बग़ैर काम कराये कुछ दे दिया जाये तो ये रहमत है और अल्लाह तआ़ाला ने ''अ़ज़ीम'' फ़रमां कर ये बता दिया कि जो नेअ़मतें व खुसूसी इनआ़ाम नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को अ़ता किये वो किसी के बयान में नहीं आ सकते और इन्सान के तसव्वुर व ख़्याल में समा नहीं सकते और वहमो गुमान में घिर नहीं सकते क्योंकि वहमो गुमान और बयान व ख़्याल महदूद होते हैं और रब तआ़ाला ने आप (अ़लैहिस्सलाम) को जो कुछ अ़ता किया वो ग़ैर महदूद है।

इस आयते करीमा में रब तआ़ला ने कई खुसूसी इनाअ़मात का ज़िक्र फ़रमाया जो उसने अपने महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को अ़ता फ़रमाये और अल्लाह का फ़ज़्ल ये उसकी खुसूसी रहमत है और आप (अ़लैहिस्सलाम) पर किताबो हिकमत नाज़िल फ़रमाना व तमाम उ़लूमे ग़ैब पर आपको मुत्तलाअ़ फ़रमाना और दीनी व दुन्यावी नेअ़मतों में सबसे आअ़ला नेअ़मत इ़ल्म है तमाम अम्बियाकिराम पर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल उनकी पैदाइश के बाद हुआ मगर हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) पर अल्लाह का फ़ज़्ल मख़लूक़ की पैदाइश से पहले से है हत्ता कि ज़मीनो आसमान की पैदाइश से भी पहले से है आप की नबूवत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की ख़िल्क़त से पहले से है कि आ़लमे अर'वाह में अल्लाह तआ़ला ने तमाम नबीयों से हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की इत्तिबा और ख़िदमात का अ़हद लिया व हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) के तवस्सुल से पिछली उम्मतें और उनके नबी दुआ़ऐं करते थे और तमाम मख़लूक़ में अल्लाह तआ़ला के सबसे पहले आ़बिद व साजिद हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हैं।

और करोड़ों साल आ़लम बनने से पहले सिर्फ़ रब तआ़ला माअ़बूद था और सिर्फ़ नूरे मुहम्मदी आ़बिद था जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है "(ऐ हबीब) आप फ़रमां दीजिये कि अगर बिल फ़र्ज़ रहमान की औलाद होती तो मैं सबसे पहला इ़बादत करने वाला होता" (सू०-जुख़रुफ़-43/81)

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाहिरी हयाते तय्यबा पर अल्लाह तआ़ाला का बहुत बड़ा फ़ज़्ल रहा कि गुज़िश्ता अम्बिया किराम अ़लैहिमुस्सलाम को गिनती के मोअ़जिज़े एक एक दो दो अ़ता हुये मगर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को बेशुमार मोअ़जिज़े अ़ता हुये बल्कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) खुद सरापा मोअ़जिज़ाह थे और आपकी ज़ाहिरी हयात के बाअ़द भी आप (अ़लैहिस्सलाम) पर रब तआ़ाला का बड़ा फ़ज़्ल है और उनमें से बाअ़ज़ फ़ज़्ल क़यामत तक ज़ाहिर होंगे और बाअ़ज़ फ़ज़्ल क़यामत के दिन और बाअ़ज़ फ़ज़्ल क़यामत के बाद जन्नत में ज़ाहिर होंगे।

अल्लाह तआ़ाला ने गुज़िश्ता अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) को चार नेअ़मतें बख़्शीं- वही, मोअ़जिज़ाह, किताब, दीन जिनमें से बाअ़ज़ को किताब मिली और बाअ़ज़ को मोअ़जिज़ाह मगर उन अम्बिया की बाद वफ़ात उनकी वही व उनके मोअ़जिज़ाह व उनकी किताबें व उनका दीन सब ख़त्म कर दिये जाते रहे और मोअ़जिज़ाह तो वफ़ात पाते ही ख़त्म कर दिये गये और उनका दीन व किताबें दूसरे नबी के तशरीफ़ लाने के बाद सब ख़त्म कर दिया गया।

मगर हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की वही व हज़ारों मोअ़जिज़े व दीन व किताब सब बाक़ी रहेंगे और नबी करीम-

सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की महबूबियत व ताअ़ज़ीमो इज़्ज़त और ज़िक्रे कसीर और आपकी बारगाह में पेश होने दुरुदो सलाम के नज़राने और आपके ज़ाहिरी व बातिनी फुयूज़ और बरकात और आपके औलिया अल्लाह और उनकी करामतें बाक़ी रहेंगी और ये वो फ़ज़्ल है जो क़यामत तक रहेगा और रोज़े क़यामत हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की तलाश और आपकी शफ़ाअ़त और आपका मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ होना और बाद क़यामत सबसे पहले आप (अ़लैहिस्सलाम) के लिये जन्नत का दर'वाज़ा खुलना व आपका हौज़े कौसर पर जलवा अफ़रोज़ होना और हूरों की आँखों की पुतलियों में और ग़िलमानों के सीनों पर हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का कलमा होगा और अबद तक अल्लाह तआ़ाला का फ़ज़्ल हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) पर रहेगा और इस फ़ज़्ल में हम उम्मतियों का भी हिस्सा होगा।

"व अ़ल्लमाका मालम तकुन ताअ़लम" इस आयत में तमाम ज़ाहिरी व मख़्फ़ी उमूर शामिल हैं जिनका इ़ल्म अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को अ़ता फ़रमाया और जुमला सुन्नतें भी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) पर वही के ज़रिये से नाज़िल की गईं जैसे कुरान नाज़िल होता था फिर रब तआ़ाला मुतवातिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की तरफ़ वही भेजता रहा और आपके इ़ल्म की तकमील फ़रमाता रहा हत्ता कि–

आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) इ़ल्म के ऐसे मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गये कि ज़मीनो आसमान की हर शैः के इ़ल्म के हामिल हो गये और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अ़लल इत्लाक़ सब मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा इ़ल्म रखने वाले सिफ़ाते कमाल के सबसे ज़्यादा जामेअ़ और सबसे ज़्यादा कामिल थे तभी तो रब तआ़ाला ने फ़रमाया 'व काना फ़द्लुल्लाहि अ़लैका अ़ज़ीमा' अल्लाह तआ़ाला का आप पर बहुत बड़ा फ़ज़्ल है

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हमारे सामने खड़े हुये और आप ने अपने खड़े होने के उस वक़्त से लेकर क़यामत तक वाक़ैअ़ होने वाली तमाम बातें बयान फ़रमायीं जिसने उस बयान को याद रखा उसने उसे याद रखा और जिसने उसे भुला दिया उसने उसे भुला दिया वो बयान मेरे साथियों के इ़ल्म में आया फिर उनमें से जब कोई चीज़ पेश आती जो मैं भूल चुका होता हूँ वो मुझे याद आ जाती है बिल्कुल इसी तरह जैसे इन्सान किसी ग़ायब हो जाने वाले शख़्स का चेहरा याद रखता है जब उसे देखता है तो पहचान लेता है। (मुस्लिम–सही–5/396-ह०–7263)

➡हज़रत मुआ़ाज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने एक रोज़ हमारे पास आने में

देर कर दी और क़रीब था कि हम सूरज की किरन देख लेते कि आप जल्दी से निकले और फिर नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हल्की नमाज़ पढ़ाई और सलाम फेरने के बाद फ़रमाया तुम जैसे हो उसी तरह अपनी अपनी सफ़ों में ठहरे रहो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) हमारी तरफ़ मुतव्वजै हुये और फ़रमाया

मैं तुमको बताता हूँ कि मुझको किसने तुमसे सुबह के वक़्त रोके रखा कि मैं रात के वक़्त उठा और वुजू किया और फिर मेरे मुक़द्दर में जितनी नमाज़ थी मैंने अदा की फिर मेरे ऊपर नींद का ग़लबा हुआ और फिर मैंने अपने रब को हसीन व जमील सूरत मे देखा अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मैंने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मैं हाज़िर हूँ अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया कि मुक़र्रब फ़रिश्ते किस चीज़ में बहस कर रहे हैं मैंने तीन बार कहा ऐ मेरे रब मैं नहीं जानता फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने अपने रब को देखा कि उसने अपनी हथेली मेरे कन्धो के दरमियान रखी और मैंने उसकी ठन्डक अपने सीने में महसूस की फिर हर चीज़ मुझ पर मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) हो गई और मैंने सब कुछ जान लिया।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/791-ह०–3235)
(अबू याअ़ला अल मुस्नद–2/514-ह०–2601)

हर वही ग़ैब की ख़बर होती है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ऐ महबूब) ये ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम आपकी तरफ़ वही फ़रमाते हैं हालाँकि आप (उस वक़्त) उनके पास न थे जब वो अपने क़लमों से कुरआ़ डालते थे कि उनमें से कौन मरयम की पर'वरिश करे और न आप उस वक़्त उनके पास थे जब वो आपस में झगड़ रहे थे।
(सू०–आले इमरान–3/44)

मज़कूरा आयते करीमा में फ़रमाया गया कि हज़रत मरयम (अ़लैहस्सलाम) का वाक़आ़ ग़ैब की ख़बरों में से है इससे माअ़लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को ग़ैब के उ़लूम अ़ता फ़रमाये और हर वही इ़ल्मे ग़ैब होती है ख़्वाह वो वही जली हो या ख़फ़ी हो और जुमला अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के वाक़आ़त जो कि कुरान व अहादीस में मज़कूर हैं वो सब ग़ैब की ख़बरें हैं।

मस्जिदे अक़सा के ख़िदमत गुज़ार बहुत से लोग हज़रत मरयम (अ़लैहस्सलाम) की पर'वरिश के उम्मीदवार थे इसलिये उनमें आपस में बहस व मुबाहसा के बाद उन लोगों ने कुरआ़ अन्दाज़ी पर फ़ैसला छोड़ दिया चुनांचा जिन क़लमों से वो लोग तौरात लिखा करते थे उन क़लमों के ज़रिये से–

उन्होंने कुरआ़ अन्दाज़ी की और ये तय हुआ कि हर कोई अपना क़लम पानी में डाले और जिसका क़लम पानी के बहाव के उल्टी तरफ़ वहना शुरु करदे वो हज़रत मरयम की क़फ़ालत करेगा सब ने अपनी अपनी क़लम पानी में डाले तो हज़रत ज़करिया (अ़लैहिस्सलाम) का क़लम उल्टी तरफ़ बहना शुरु हो गया और इस तरह हज़रत मरयम (अ़लैहस्सलाम) हज़रत ज़करिया (अ़लैहिस्सलाम) की क़फ़ालत में आ गईं।

ये सारा वाक़आ़ ग़ैब की अ़जीब ख़बरों में से है चूँकि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने न तो उ़ल्मा की सुहबत पाई थी और न तारीख़ी कुतुब का मुताअ़ला किया था और न आप उस जिस्म के साथ वहाँ मौजूद थे इसलिये इस वाक़ए़ को अल्लाह तआ़ला ने ग़ैब फ़रमाया वरना तवारीख़ के ज़रिये वाक़आ़त का माअ़लूम हो जाना ग़ैब नहीं होता अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) से लेकर हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) तक सब नबीयों के अहवाल पर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को मुत्तलाअ़ फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को वही के ज़रिये इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया और ये अ़क़ीदा रखना कि अल्लाह तआ़ला ने अपने गुयूब में से आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को इ़ल्मे गैब अ़ता फ़रमाया और ऐसा अ़क़ीदा रखना ईमान का आअ़ला जुज़ और ईमान के तहफ़्फ़ुज़–

का बाइस है और अल्लाह तआ़ला की वही और उसकी ताअ़लीम से हर चीज़ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर मुन्कशिफ़ हो गई और आप ने हर ज़ाहिर व पोशीदा चीज़ को जान लिया।

एक और मक़ाम पर इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ये (बयान उन) ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम आपकी तरफ़ वही करते हैं। (सू०–हूद–11/49)

इस आयते करीमा में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से ख़िताब करते हुये फ़रमाया कि ऐ हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) और उनकी क़ौम के जिस वाक़्अ़े की हमने आपको ख़बर दी है ये ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम आपकी तरफ़ वही करते हैं और आपको और आपकी उम्मत को इससे पहले उनकी ख़बर न थी और हम आपकी तरफ़ ग़ैबी ख़बरों पर मुश्तमिल वही करते रहते हैं कभी वही ख़फ़ी से और कभी वही जली से आपको मुत्तलाअ़ फ़रमाते हैं और वही ख़फ़ी से आपने जाना और जब वही जली आई याअ़नी कुरान मजीद की आयात से तो क़यामत तक सब उम्मत ने जान लिया।

नबी याअ़नी ग़ैब की ख़बर देने वाला और ग़ैब की दो क़िस्में हैं एक वो ग़ैब जिसमें मख़लूक़

के इ़ल्म का कोई तअ़ाल्लुक़ न हो ये ग़ैब अल्लाह तअ़ाला के मख़सूस व मुक़र्रब बन्दों को मिलता है और दूसरा वो ग़ैब जिसमें मख़लूक़ का तअ़ाल्लुक़ हो और फिर वही जली याअ़नी कुरान मजीद की ग़ैबी ख़बरों का इ़ल्म हर उस शख़्स को हासिल होगा जिसको कुरान की समझ होगी और अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने अपने महबूब को ख़िल्क़ते मख़लूक़ से पहले इ़ल्मे ग़ैब की अ़ज़ीम व आअ़ला नेअ़मत से सरफ़राज़ फ़रमाया और फिर जिसको ‘‘अरर्ह़मानु अ़ल्लमल कुरआन’’ की सनद मिल गई हो तो उसके इ़ल्मे ग़ैब की कोई इन्तिहां नहीं और कोई अ़क़्ल उसका इदराक नहीं कर सकती और आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब की इन्तिहां का अन्दाज़ा लगाना ना मुम्किन है अल्लाह तअ़ाला ने अपने महबूब हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को तमाम गुयूब पर अज़ल से ही मुत्तलाअ़ फ़रमां दिया था और दीगर लोगों को जो उ़लूम मिले वो कुरान के नुज़ूल के बाद मिले।

अल्लाह तअ़ाला ने हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) व उनकी क़ौम के मुफ़स्सल हालात बयान फ़रमाये और हालात बताने के बाद फ़रमाया कि ये ग़ैब की ख़बरें हैं और आप को माअ़लूम हो जाने के बाद भी ग़ैब का इत्लाक़ फ़रमाया और जो लोग अल्लाह तअ़ाला पर और क़यामत पर व जन्नत व दोज़ख़ पर ईमान लाये–

तो उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के बतलाने पर ही उनको जाना व माना तो उनके मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया ''यु-मिनूना बिल ग़ैब'' जो लोग ग़ैब पर ईमान लाते हैं इस आयत में क़यामत व जन्नत, दोज़ख़ बग़ैराह इन चीज़ों पर ग़ैब का इत्लाक़ फ़रमाया गया जो मुत्तक़ीन को पहले ही बता दी गईं थीं तो इस तफ़्सील से वाज़ेह हो गया कि जो लोग ये कहते हैं कि जो चीज़ बता दी जाये या जिस चीज़ की ख़बर दे दी जाये वो ग़ैब नहीं रहती उनका ये कहना बिल्कुल ग़लत और बे बुनियाद है और ये एतराज़ ग़ैब की ना वाक़फ़ियत पर मबनी है।

ग़ैब की ताअ़रीफ़ ये है कि जिस चीज़ को हवासे ख़मसा (देखने, सुनने, सूँघने, चखने, और छूने की पाँच कुव्वतें) और अ़क़्ल से न जाना जा सके वो ग़ैब है इसी तरह ये भी कहना इ़ल्मी तौर पर ग़लत है कि आप (अ़लैहिस्सलाम) को ग़ैब की ख़बरों का इ़ल्म है मगर इ़ल्मे ग़ैब नहीं है क्योंकि इ़ल्म के हुसूल के तीन ज़रिये हैं हवास व अ़क़्ले सलीम व ख़बरे सादिक़ तो जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को मुख़बिर सादिक़ से ग़ैब की ख़बरों का इ़ल्म हो गया तो आपको ग़ैब का इ़ल्म हो गया अलबत्ता आपको आ़लिमुल ग़ैब कहना जाइज़ नहीं बल्कि यूँ कहना चाहिये कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को ग़ैब का इ़ल्म अ़ता किया गया या फिर यूँ कहना चाहिये कि आप मुत्तलाअ़ अ़लल ग़ैब हैं।

और एक मक़ाम पर इरशादे बारी तआ़ला है
(ये क़िस्सा) ग़ैब की ख़बरों में से है जिसे हम आपकी तरफ़ वही फ़रमां रहे हैं और आप उनके पास मौजूद न थे जब वो अपनी साजिशी तदबीर पर जमाअ़ हो रहे थे और वो मक्र व फ़रेब कर रहे थे। (सू०-युसूफ़-12/102)

तमाम वाक़्आ़ते युसूफ़ सूरह युसूफ़ के ज़रिये व इसके अ़लावा बहुत सी मज़ीद तफ़्सील वही ख़फ़ी के ज़रिये जो कुछ आप अ़लैहिस्सलाम को बतलाया गया वो सब ग़ैब की ख़बरें थीं और सब मख़लूक़ के लिये भी ग़ैब थीं अल्लाह तआ़ला ने ये मख़्फ़ी क़िस्से आपको बताये और आपने लोगों को बताये इस वाक़्अ़े की कुछ बातें पहले यहूदियों को बा ज़रिया-ए-तौरात, ज़बूर व इन्जील से माअ़लूम हुईं मगर वाक़्आ़ते युसूफ़ की बहुत सी बातें न तौरात में थीं न ज़बूर थीं में और न इन्जील में थीं और न किसी को माअ़लूम थीं पस रब तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मेरे हबीब कुछ बातें वो हैं जो बिल्कुल ही मख़्फ़ी हैं जो कि जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) को भी माअ़लूम नहीं हैं और न कुरान में ज़ाहिर की गईं हैं सिर्फ़ वही ख़फ़ी के ज़रिये आपको ही माअ़लूम हुईं हैं और वाक़्आ़ते युसूफ़ का आपने आ़लमे अर'वाह में मुशाहदा किया था और इसका इ़ल्म आप को दो तरह से दिया गया वही जली से और वही ख़फ़ी से यानी वो बातें जो युसूफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के मुताअ़ल्लिक़ आपने अहादीस व रिवायते मशहूरा बयान फ़रमाईं

हुज़ूर को आ़लमे अर‘वाह में भी इ़ल्मे ग़ैब अ़ता किया गया

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आ़लमे अर‘वाह में बेशुमार वाक़्आ़त और ग़ैब की ख़बरों व मख़्फ़ी बातों का अपने प्यारे हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और वाक़ैअ़ होने वाले मुताअ़द्दद वाक़्आ़त का मुशाहदा कराया और फिर आप को वो वाक़्आ़त याद दिलाये गये जो आपने पहले से देखे हुये थे कुरान मजीद में कई मक़ामात पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ हबीब क्या आपने नहीं देखा यानी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) उन वाक़्आ़त का पहले ही मुशाहदा कर चुके थे।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(ऐ हबीबे मुकर्रम) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो मौत के डर से अपने घरों से निकल गये हालाँकि वो हज़ारों (की ताअ़दाद में) थे तो अल्लाह ने उन्हें हुक्म दिया मर जाओ (सो वो सब मर गये) फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमां दिया।
(सू०-बक़राह-2/243)

बनी इसराईल की एक जमाअ़त थी जिसके इ़लाक़े में ताऊ़न फैल गया तो वो मौत के डर से अपनी बस्तियाँ छोड़कर भाग गये और जंगल में पहुँच गये और हुक्मे इलाही से सब वहीं मर गये

फिर कुछ अ़रसा के बाद हजरत हिज़क़ील (अ़लैहिस्सलाम) की दुआ़ से उन्हें रब तआ़ला ने ज़िन्दा फ़रमाया और फिर वो मुद्दतों ज़िन्दा रहे इस पूरे वाक़ए़ का हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने दुनियाँ में तशरीफ़ लाने से क़ब्ल आ़लमे अर'वाह इस पूरे वाक्ए़ का मुशाहदा फ़रमाया था तभी तो अल्लाह तआ़ला ने आपको याद दिलाया कि ऐ हबीब क्या आपने उनको नहीं देखा और ये आयत हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब की सरीह दलील है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(ऐ हबीबे मुकर्रम) क्या आपने बनी इसराईल के उस गिरोह को नहीं देखा जो मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद हुआ उन्होंने अपने पैग़म्बर से कहा कि हमारे लिये एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम (उसकी क़यादत में) अल्लाह की राह में जंग करें और नबी ने (उनसे) फ़रमाया कहीं ऐसा न हो कि तुम पर क़िताल फ़र्ज़ कर दिया जाये तो तुम क़िताल ही न करो तो वो कहने लगे कि हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह की राह में जंग न करें जबकि हमें अपने घरों से और औलाद से जुदा कर दिया है सो जब उन पर क़िताल फ़र्ज़ कर दिया गया तो उनमें से चन्द एक के सिवा सब फिर गये। (सू०-बक़राह-2/246)

मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के बाद जब बनी इसराईल

के एतक़ादी व अ़मली हालात निहायत ख़राब हो गये और उन्होंने अ़हदे इलाही को फ़रामोश कर दिया और बुत परस्ती में मुब्तिला हो गये और सरकशी व बद अफ़आ़ली इन्तिहां को पहुँच गई तो उन पर क़ौमे जालूत मुसल्लत कर दी गयी और उसने बनी इसराईल के शहर छीन लिये व उनको गिरफ़्तार किया गया व उन पर तरह तरह की सख़्तियाँ की गईं तो वहाँ के लोगों ने मिस्र व फ़िलिस्तीन के दरमियान बहरे रोम के साहिल पर पनाह ली इस ज़माने में बनी इसराइल में कोई नबी मौजूद न थे ख़ानदाने नबूवत में सिर्फ़ एक बीवी बाक़ी रही थीं जो कि हामला थीं उनके यहाँ एक बेटे की विलादत हुई जिनका नाम शमवील रखा गया जब वो बड़े हुये तो अल्लाह तआ़ला ने शमवील (अ़लैहिस्सलाम) को मन्सबे नबूवत अ़ता फरमाई और फिर आप हुक्मे इलाही से अपनी क़ौम की तरफ़ गये

तो उन लोगों ने आप (अ़लैहिस्सलाम) को नबी मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि अगर आप नबी हैं तो हमारे लिये एक बादशाह मुक़र्रर करें तो आप (अ़लैहिस्सलाम) ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की अल्लाह तआ़ला ने आपकी दुआ़ को कुबूल फ़रमाते हुये एक बादशाह मुक़र्रर कर दिया और जिहाद का हुक्म दिया लेकिन बाद में वही हुआ जिसका अंदेशा था जो आप (अ़लैहिस्सलाम) ने ज़ाहिर फ़रमाया था यानी कुछ लोग जिहाद के लिये तैयार रहे बाक़ी सब ने मुँह फेर लिया।

इरशादे बारी तआला हैः-

(ऐ हबीबे मुकर्रम) क्या आपने उस शख़्स को नहीं देखा जो इस वजह से कि अल्लाह ने उसे सल्तनत दी थी (वो) इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) से (खुद) अपने रब के बारे में झगड़ा करने लगा कि जब इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा मेरा रब वो है जो ज़िन्दा (भी) करता है और मारता (भी) है तो (जवाबन वो) कहने लगा मैं (भी) ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा बेशक अल्लाह सूरज को मशरिक़ की तरफ़ से निकालता है तू उसे मग़रिब की तरफ़ से निकाल ला सो वो काफ़िर दहशत ज़दा हो गया।
(सू०-बक़राह-2/258)

हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने बादशाह नमरुद को तौहीद की दाअ़वत दी तो वो कहने लगा कि तुम्हारा रब कौन है जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो इस पर इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने जवाब दिया कि मेरा रब वो है जो ज़िन्दगी देता है और मौत देता है यानी अजसाम में मौत व हयात पैदा फ़रमाता है तो नमरुद ने दो शख़्सों को बुलाया और उनमें से एक को क़त्ल कर दिया और दूसरे को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी ज़िन्दा करता हूँ और मौत देता हूँ हालांकि ये उसकी निहायत अहमकाना बात थी कि कहाँ क़त्ल करना और छोड़ना और कहाँ मौत व हयात पैदा करना चूँकि नमरुद ने खुद को शर्मिन्दा होने से बचाने के लिये ऐसा अहमकाना जवाब दिया फिर-

हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि मेरा रब सूरज को मशरिक़ से निकालता है तू मग़रिब से निकाल कर दिखा ये सुनकर नमरुद हक्का बक्का रह गया और कोई जवाब न दे सका।

हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने आ़लमे अर‘वाह में मज़कूरा इस पूरे वाक़ए़ का मुशाहदा फ़रमाया था इसलिये इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने इस वाक़ए़ को याद दिलाते हुये फ़रमाया कि ऐ प्यारे हबीब आपने उस शख़्स को नहीं देखा जो हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) से अपने रब के बारे में झगड़ा कर रहा था और ये आयते करीमा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब को साबित करती है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(ऐ हबीब) क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने (क़ौमे) आ़द के साथ कैसा (सुलूक) किया जो इरम (के लोग थे) और बड़े बड़े सुतूनों (की तरह दराज़ क़द और ऊँचे महल्लात) वाले थे जिनका मिस्ल (दुनियाँ के) मुल्कों में (कोई भी) पैदा नहीं किया गया और समूद (के साथ क्या सुलूक हुआ) जिन्होंने वादी में चट्टानो को काट (कर पत्थरों से सैंकड़ों शहरों को ताअ़मीर कर) डाला था और फ़िरऔ़न (का क्या हश्र हुआ) जो बड़े लश्करों वाला था ये वो लोग थे जिन्होंने (अपने अपने) मुल्को में सरकशी की थी फिर उनमें बड़ी फ़साद-

अंगेज़ी की थी तो आपके रब ने उन पर अ़ज़ाब का कोढ़ा बरसाया। (सू०–फ़ज्र–89/6 ता 13)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इन आयतों में कुफ़्फ़ार की तीन क़ौमों का इजमालन ज़िक्र फ़रमाया और ये फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उन पर अ़ज़ाब का कोढ़ा बरसाया लेकिन उनके अ़ज़ाब की कैफ़ियत बयान नहीं फ़रमाई अलबत्ता सू०–हाक़्क़ाह में इन क़ौमों के अ़ज़ाब की कैफ़ियत बयान फरमाई ''पस क़ौमे समूद के लोग हद से ज़्यादा कड़कदार चिंघाड़ वाली आवाज़ से हलाक कर दिये गये और रहे क़ौमे आ़द के लोग तो वो भी ऐसी तेज़ आँधी से हलाक कर दिये गये जो इन्तिहाई सर्द व निहायत गरज़दार थी और (इसी तरह) फ़िरऔ़न और जो उससे पहले थे और (क़ौमे लूत की) उल्टी हुईं बस्तियों (के बाशिन्दों) ने बड़ी ख़तायें की थीं पस उन्होंने भी अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की सो अल्लाह ने उन्हें निहायत सख़्त गिरफ़्त में पकड़ा।
(सू०–हाक़्क़ाह–69/5 ता 10)

इसके अ़लावा फ़िरऔन और उसकी क़ौम के अ़ज़ाब की तफ़्सील सू०–युनूस में बयान फ़रमाई और हम बनी ईसराईल को समुन्दर के पार ले गये पस फ़िरऔ़न और उसके लश्कर ने सरकशी और जुल्म से उनका पीछा किया यहाँ तक कि जब फ़िरऔ़न डूबने लगा तो उसने कहा मैं ईमान लाया कि उस ज़ात के सिवा कोई माअ़बूद नहीं–

जिस पर बनी इसराईल ईमान लाये हैं और अब मैं मुसलमानों में से हूँ (जवाब दिया गया कि) अब ईमान लाता है हालांकि तू पहले (मुसलसल) ना फ़रमानी करता रहा और तू फ़साद बपा करने वालों में से था (ऐ फ़िरऔ़न) सो आज हम तेरे (बेजान) जिस्म को बचा लेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिये (इबरत की) निशानी हो सके और बेशक अक्सर लोग हमारी निशानियों को समझने से ग़ाफ़िल हैं। (सू०–युनूस–10/90 ता 92)

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को क़ौमे आ़द व समूद और फ़िरऔ़न पर मुसल्लत होने वाले सख़्त अ़ज़ाब की याद दिलाते हुये फ़रमाया कि ऐ हबीब क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने क़ौमे आ़द व समूद और फ़िरऔ़न के साथ कैसा सुलूक किया यानी उन पर होने वाले अ़ज़ाब को आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने आ़लमे अर'वाह में पहले ही मुशाहदा फ़रमाया था और ये सब ग़ैब की ख़बरे थीं जिनका इ़ल्म आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को पहले से ही था सिर्फ़ आपको इन आयात के ज़रिये याद दिलाया गया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

(ऐ हबीब) क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या सुलूक किया क्या उसने उनके मक्र व फ़रेब को बातिल व नाकाम–

नहीं कर दिया और उसने उन पर (हर सिम्त से) परिन्दों के झुण्ड के झुण्ड भेज दिये जो उन पर कंकरीले पत्थर मारते थे फिर अल्लाह तआ़ाला ने उन को खाये हुये भूसे की तरह पामाल कर दिया (सू०–फ़ील–105/1 ता 5)

यमन और हब्शा के बादशाह अबरहा ने काअ़बा मुअ़ज़्ज़मा को ढ़ाने का इरादा किया तो वो इस इरादे से अपना लश्कर लेकर काअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की तरफ़ चल दिया उस लश्कर में बहुत से हाथी थे अबरहा जब मक्का मुकर्रमा के क़रीब पहुँचा तो उसने अहूले मक्का के तमाम जानवर क़ैद कर लिये उनमें से हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब के दो सो ऊँट भी थे हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब अबरहा के पास आये तो उसने पूछा कि आप किस मक़सद से यहाँ आये हैं और आपका क्या मुतालबा है आपने फ़रमाया मेरा ये मुतालबा है कि मेरे ऊँट मुझे वापस कर दिये जायें अबरहा ने कहा मुझे आप की बात सुनकर बड़ा तअ़ाज्जुब हुआ है।

कि मैं ख़ाना–ए–काअ़बा को ढ़ाने के लिये यहाँ आया हूँ जो आपका व आपके बाप दादाओं का मुअ़ज़्ज़म व मुहतरम मुक़ाम है आप उसके लिये तो कुछ नहीं कहते और अपने ऊँटों की वापसी का मुतालबा कर रहे हैं आप ने फ़रमाया कि मैं सिर्फ़ ऊँटों का मालिक हूँ इसलिये उन्हीं के बारे में कहता हूँ और जो काअ़बे का मालिक है वो खुद उसकी हिफ़ाज़त फ़रमायेगा।

ये सुनकर अबरहा ने आपके ऊँट वापस कर दिये हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब ने वापस आकर कुरैश को सारे सूरते हाल से आगाह किया और उन्हें मशवरा दिया कि वो पहाड़ों की घाटियों व चोटियों में पनाह ले लें चुनांचा कुरैश ने ऐसा ही किया और हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब काअ़बे के दरवाज़े पर पहुँचकर बारगाहे इलाही में काअ़बा मुअ़ज़्ज़मा की हिफ़ाज़त की दुआ़ की और दुआ़ से फ़ारिग़ होकर हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब भी अपनी क़ौम की तरफ़ चले गये।

अबरहा ने सुबह तड़के अपने लश्कर को काअ़बा मुअ़ज़्ज़मा पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अबरहा के लश्कर पर परिन्दों की फ़ौजें भेजीं और उनमें से हर परिन्दे के पास तीन कंकरियां थी दोनों पाँव और एक चौंच में थी और वो परिन्दे आये और कंकरीले पत्थरों से उन्हें मारने लगे जिस शख़्स पर वो पत्थर गिरता तो वो पत्थर उसके खोद को तोड़कर सर से निकलता हुआ जिस्म को चीर कर हाथी से गुज़रता हुआ ज़मीन पर गिर जाता और हर संगरेज़े पर उस शख़्स का नाम लिखा हुआ था जिस संगरेज़े से उसे हलाक किया गया था इस तरह उन परिन्दों ने अबरहा के लश्कर के जानवरों को खाये हुये भूसे की तरह कर दिया और जिस साल ये वाक़आ़ रुनुमा हुआ उसी साल सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की विलादत हुई।

इन आयात में फ़रमाया गया कि क्या आपने इस वाक़ेअ़ को नहीं देखा हालाँकि ये वाक़ेआ आपकी विलादत से पहले हुआ था तो जो वाक़ेआ आपकी पैदाइश मुबारका से पहले रुनुमा हुआ तो उसको आप कैसे देख सकते हैं तो वाज़ेह हुआ कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने असहाबे फ़ील का पूरा वाक़ेआ आ़लमे अर‘वाह में मुशाहदा फ़रमाया था सिर्फ़ इस आयत में आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को याद दिलाना मक़सूद था मज़कूरा तमाम आयात की रोशनी व दलाइल से ये बात साबित हुई कि अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को आ़लमे अर‘वाह में बेशुमार वाक़आत व ग़ैब की ख़बरों और मख़्फ़ी बातों का इल्म अ़ता फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को ग़ैब के उ़लूम अ़ता फ़रमाये।

–: ईमान बिल ग़ैब :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ये (किताब) मुत्तक़ीन के लिये हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने अ़ता किया है उसमें से (हमारी राह) में ख़र्च करते हैं।
(सू०–बक़राह–2/2-3)

मज़कूरा आयत में मुत्तक़ीन की तीन सिफ़ात बयान की गई हैं ईमान बिल ग़ैब व नमाज़ क़ायम करना और राहे खुदा में ख़र्च करना और इन सिफ़ात में पहली सिफ़त ग़ैब पर ईमान लाना है और सबसे पहले हम ईमान की वज़ाहत करेंगे फिर ग़ैब पर मुफ़स्सल गुफ़्तगू करेंगे ईमान का एक माअ़ना है कि नफ़्स का मुतमइन होना और दिल का तस्दीक़ करना और कामिल यक़ीन और शक व शुबा का ज़ाइल होना इसके अ़लावा ईमान के कई और माअ़नी भी हैं जिसमें एक ये है कि अल्लाह की तौहीद व रसूलुल्लाह की रिसालत का ज़ुबान से इक़रार व दिल से तस्दीक़ करना और शरीअ़ते मुताह्रा को तसलीम करना और उसका हक़ के साथ इक़रार करना है।

जब जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से ईमान के मुताअ़ल्लिक़ सवाल किया–

तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला व उसके फ़रिश्तों व उसके सहीफ़ों और उसके रसूलों और क़यामत और हर अच्छी बुरी चीज़ को तक़दीर के साथ वाबस्ता मानना ईमान है इस हदीस में छः चीज़ों के मानने पर ईमान का इत्लाक़ किया गया
(बुख़ारी–सही–1/108-ह०–50)
(मुस्लिम–सही–1/119-ह०–93)

और कुरान मजीद मे ईमान व मुत्तक़ीन की ताअ़रीफ़ कुछ इस तरह बयान की गई ''नेकी सिर्फ़ यही नहीं कि तुम अपने मुँह मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ फेर लो बल्कि अस्ल नेकी तो ये है कि कोई शख़्स अल्लाह तआ़ाला पर और यौमे क़यामत पर और फरिश्तों पर और अल्लाह की किताब पर और पैग़म्बरों पर ईमान लाये और अल्लाह की मुहब्बत में (अपना) माल क़राबतदारों पर और यतीमों पर और मुहताजों व मुसाफ़िरों पर और माँगने वालों पर और गुलामों की गर्दनों को अज़ाद कराने में ख़र्च करे और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे और जब कोई वाअ़दा करें तो अपना वाअ़दा पूरा करें और सख़्ती (तंगदस्ती) में, मुसीबत (बीमारी) में और जंग की शिद्दत (जिहाद) के वक़्त सब्र करने वाले हों यही लोग सच्चे हैं और यही लोग मुत्तक़ीन है।
(सू०–बक़राह–2/177)

सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) जो दीन व शरीअ़त लेकर आये हैं उस

पर एतक़ाद रखना और दिल से उसकी तस्दीक़ और इस पर मुकम्मल यक़ीन रखने पर ईमान का इत्लाक़ किया जाता है इमाम शाफ़ई फ़रमाते हैं कि ईमान तस्दीक़, इक़रार और अ़मल का नाम है जिसकी तस्दीक़ में ख़लल हो वो मुनाफ़िक़ है और जिसके इक़रार में ख़लल हो वो काफ़िर है और जिसके अ़मल में ख़लल हो वो फ़ासिक़ है और ईमान में कमी और ज़्यादती होती है हदीस पाक में है हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ईमान की साठ से कुछ ज़ायद शाख़ें हैं और हया भी ईमान की एक शाख़ है।
(बुख़ारी–सही–1/84–ह०–9)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा सादगी ईमान का हिस्सा है और ये कलिमात दो बार फ़रमाये यानी ज़ैबो ज़ीनत को छोड़ देना। (अबू दाऊद–सुनन–5/210-ह०–4161)

यानी ईमान के कई अजज़ा हैं और जो शख़्स इन अजज़ा में से किसी जुज़ पर अ़मल को तर्क करेगा उसके ईमान में कमी आयेगी यानी अगर नेक आअ़माल कम होंगे तो ईमान कम होगा और नेक आअ़माल ज़्यादा होंगे तो ईमान ज़्यादा होगा।

ग़ैब की ताअ़रीफ़ः-

जिसका चीज़ का हवासे ख़मसा से इदराक करना नामुम्किन हो और न ही अ़क्ल से माअ़लूम किया जा सके और जो चीज़ तुम से ग़ायब हो और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उसकी ख़बर दी वो सब ग़ैब है जैसे मरने के बाद के अहवाल, क़ब्र के अहवाल अ़ज़ाबे क़ब्र, व आ़लमे बरज़ख़ के अहवाल अलामाते क़यामत, व अहवाले क़यामत, और जन्नत व दोज़ख़, व हौज़े कौसर, मीज़ान, पुलसिरात व आसमानों के ऊपर की मख़लूक़ात और जिन्नात व मलायका यानी हर वो चीज़ जो ग़ायब थी और हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उसकी ख़बर दी वो सब ग़ैब है और इस आयत में ग़ैब से मुराद हर वो चीज़ जिसकी तरफ़ अ़क्ल की रसाई नामुम्किन हो और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उसकी ख़बर दी है वो सब ग़ैब है और सबसे अफ़ज़ल ईमान ईमान बिल ग़ैब है क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया कि ये किताब मुत्तक़ीन के लिये हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने बाअ़ज़ औलिया अल्लाह को ख़िताबे इल्हाम के ज़रिये ग़ैब का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और बाअ़ज़ को कशफ़े हिजाब के ज़रिये ग़ैब का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और बाअ़ज़ औलिया के लिये लौहे महफ़ूज़ को मुन्कशिफ़ कर दिया गया और वो उसको देख लेते

हैं और इस पर दलील के लिये ये काफ़ी है कि हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) बाअ़ज़ के नज़दीक वली थे (अगरचा तहक़ीक़ ये है कि वो नबी थे) और कुरान मजीद ने उनके इ़ल्मे ग़ैब को बयान किया है अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अपनी बीवी के हमल के मुताअ़ल्लिक़ ख़बर दी उनके यहाँ लड़का होगा और इसी तरह हुआ और हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर अजम में सारया व उनका लश्कर मुन्कशिफ़ हो गया और उन्होंने जुमआ़ के दिन दौराने खुत्बा कहा ऐ सारया पहाड़ की ओट में हो जा और बेशुमार मुअ़तबर कुतुब में बाअ़ज़ औलिया को ग़ैब की ख़बर देने के बहुत से वाक़आ़त मौजूद हैं

अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया-ए-इज़ाम का इ़ल्म अल्लाह तआ़ला के ख़बर देने से है और हमारा इ़ल्म उनके ख़बर देने से है और अल्लाह तबारक व तआ़ला का इ़ल्म उसकी सिफ़ाते क़दीमा, अज़लिया और दायमा व अब्दिया में से एक सिफ़त है जो हुदूस, तग़य्युर और हर ऐ़ब व नक़्स से मुनज़्ज़ाह है और उसको तमाम कुल्लियत व जुज़यात का इ़ल्म है और इसी इ़ल्म के साथ अल्लाह तआ़ला ने अपनी मदाह की है और फरमाया ''और ग़ैब की कुन्जियाँ (यानी वो रास्ते जिनसे ग़ैब किसी पर आशकार किया जाता है) उसी के पास (उसकी कुदरत व मिल्कियत में है) उन्हें उनके सिवा (अज़ खुद) कोई नहीं जानता और वो हर उस चीज़ को बिला वास्ता जानता है

जो खुश्की में और दरियाओं में है और कोई भी पत्ता नहीं गिरता मगर ये कि वो उसे जानता है और न ज़मीन की तारीकियों में कोई ऐसा दाना है और न कोई तर चीज़ है और न कोई खुश्क चीज़ मगर रोशन किताब में (सब कुछ लिख दिया गया है) (सू०-अनआ़म-6/59)

अल्लाह तबारक व तआ़ला के अ़लावा अगर किसी को इ़ल्मे ग़ैब है तो उसको अल्लाह तआ़ला के इल्हाम (ख़बर देने व ज़ाहिर करने) व उसकी इत्तिलाअ़ से है यानी अल्लाह तबारक व तआ़ला अल गुयूबुल मुत्लक़ के इ़ल्म के साथ मुताफ़र्रिद (तन्हा, अकेला) है जो तमाम माअ़लूमात के साथ मुताअ़ल्लिक़ है और वो अपने मुन्तख़ब रसूलों को इल्मे ग़ैब पर मुत्तलाअ़ फ़रमाता है और अपने बाअ़ज़ औलिया को भी इ़ल्मे ग़ैब पर मुत्तलाअ़ फ़रमाता है और ये इत्तिलाअ़ अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की इत्तिलाअ़ से कम मर्तबे की होती है बहरहाल अल्लाह तबारक व तआ़ला के साथ जो ग़ैब मुख़्तस है वो अल ग़ैब अल मुत्लक़ है और अम्बिया व औलिया जिस ग़ैब के हामिल हैं वो ग़ैब अल्लाह तआ़ला के इल्हाम और उसकी इत्तिलाअ़ से है यानी अल्लाह तआ़ला ने हस्बे मरातिब ग़ैब की ख़बरों पर मुत्तलाअ़ फ़रमाया है और ग़ैबे मुत्लक़ यानी तमाम माअ़लूमात का इहाता-ए-कामला ये अल्लाह तआ़ला के साथ ख़ास है और उसी को गैब मुत्लक़ का इ़ल्म है।

ग़ैब के इल्म की दो क़िस्में हैं (1) इल्मे ग़ैब ज़ाती जो अल्लाह तआ़ाला के साथ ख़ास है और जिन आयात में गैरुल्लाह से इल्मे ग़ैब की नफ़ी की गई है वहाँ यही इल्मे ग़ैब मुराद होता है।

(2) इल्मे ग़ैब अ़ताई मसलन अल्लाह तबारक व तआ़ाला की ज़ात व सिफ़ात व गुज़िश्ता अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) और क़ौमों के अहवाल और मुस्तक़बिल में वाक़ैअ़ होने वाले वाक़्आ़त व अहवाल और क़यामत में होने वाले वाक़्आ़त व अहवाल व दीगर माज़ी व मुस्तक़बिल के अहवाल व वाक्आ़त बग़ैराह का इल्म ये सब इल्मे ग़ैब है जो कि अल्लाह तबारक व तआ़ाला के बताने से माअ़लूम हुये और जहाँ भी गैरुल्लाह के लिये ग़ैब के इल्म का सबूत है वहाँ अल्लाह तबारक व तआ़ाला के बताने से हासिल हुआ है और अल्लाह तआ़ाला के बताये बग़ैर किसी के लिये एक ज़र्रे का इल्मे ग़ैब मानना क़तई कुफ़्र है और अल्लाह तआ़ाला अपने पसंदीदा मख़सूस व मुक़र्रब बन्दो जैसे अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया-ए-इज़ाम रहमतुल्लहि तआ़ाला अ़लैहिम पर ग़ैब के दरवाज़े खोल देता है जो कि कुरान व अहादीस से साबित है।

-: कुरान ग़ैब है :-

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और वो (यानी रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ग़ैब के बताने पर बिल्कुल बख़ील नहीं हैं। (सू०-तकवीर-81/24)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को तमाम अव्वलीन व आख़िरीन व अ़र्श ता फ़र्श और शर्क़ ता ग़र्ब का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया जो कि कुतुबे अहादीस और तसानीफ़े क़दीम व जदीद में इसके दलाइल मौजूद हैं और कुरान मजीद से आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का इ़ल्मे ग़ैब साबित है हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को जो इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया गया उस ग़ैब के बताने में वो बुख़्ल नहीं फ़रमाते और इस आयत में ग़ैब से मुराद कुरान है और कुरान मजीद हर शैः का तफ़्सीली और रौशन बयान है और कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो कुरान में मौजूद न हो।

और आपके रब (के इ़ल्म) से एक ज़र्रा बराबर भी (कोई चीज़) न ज़मीन में पोशीदा है और न आसमान में और न उस ज़र्रे से कोई छोटी चीज़ है और न बड़ी मगर वाज़ेह किताब लौहे महफ़ूज़ में (दर्ज) है। (सू०-यूनुस-10/61)

ये कुरान ऐसा नहीं है कि उसे अल्लाह (की वही) के बग़ैर गढ़ लिया गया हो लेकिन (ये) उन (सब किताबों) की तस्दीक़ (करने वाला) है जो इससे पहले (नाज़िल हो चुकी) हैं और जो कुछ (रब तआ़ला ने लौह में) लिखा है उसकी तफ़्सील है। (सू०-यूनुस-10/37)

और हमने आप पर वो अ़ज़ीम किताब नाज़िल फ़रमाई है जो हर चीज़ का वाज़ेह बयान है और मुसलमानों के लिये (ये) हिदायत व रहमत और बशारत है। (सू०-नह्ल-16/89)

हमने किताब में कोई चीज़ ऐसी नहीं छोड़ी (जिसे सराहतन या इशारतन बयान न कर दिया हो) (अनआ़म-6/38)

और न कोई तर चीज़ है और न कोई खुश्क चीज़ मगर रोशन किताब में (सब कुछ लिख दिया गया है) (सू०-अनआ़म-6/59)

ये (कुरान) ऐसा कलाम नहीं जो गढ़ लिया जाये बल्कि (ये तो) उन (सब आसमानी किताबों) की तस्दीक़ है जो इससे पहले (नाज़िल हुईं) हैं और (ये कुरान) हर शैः का तफ़्सीली बयान है और हिदायत है और रहमत है उस क़ौम के लिये जो ईमान ले आये। (सू०-युसूफ़-12/111)

कुरान ग़ैब है पस अल्लाह तआ़ला ने अपने

हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को कुरान अ़ता फ़रमाया और आप (अ़लैहिस्सलाम) ने उसकी ताअ़लीम दी और सरकारे दो आ़लम हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने उसके साथ बुख़्ल नहीं किया।

(वो) रहमान ही है जिसने (खुद अपने हबीब को) कुरान सिखाया। (सू०–रहमान–55/1,2)

और अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने आप पर किताब व हिकमत नाज़िल फ़रमाई और उसने आप को वो सब इ़ल्म अ़ता कर दिया जो आप नहीं जानते थे और आप पर अल्लाह का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है। (सू०–निसा–4/113)

अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने साहिबे कुरान हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को जुमला मौजूदात वमा काना मा यकूनु इला योमल क़ियामह व लौहे महफ़ूज़ का इ़ल्म दिया और शर्क़ ता ग़र्ब और अ़र्श ता फ़र्श और ज़मीन और आसमान यानी कोई ज़र्रा हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इ़ल्म से बाहर न रहा।

रब तआ़ला अपने मुन्तख़ब रसूलों को ग़ैब पर मुत्तलाअ़ फ़रमाता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और अल्लाह तआ़ला की ये शान नहीं कि (ऐ आ़म लोगो) तुम्हें ग़ैब पर मुत्तलाअ़ फ़रमादे मगर अल्लाह तआ़ला अपने रसूलों में से जिसे चाहे (ग़ैब के इ़ल्म के लिये) चुन लेता है।
(सू०-आले इमरान-3/179)

मज़कूरा आयते करीमा इस बात पर दलालत करती है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को क़्यामत तक की तमाम अशया का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया गया और आपके इल्मे ग़ैब पर एतराज़ करना मुनाफ़िक़ीन का तरीक़ा है जैसा कि मज़कूरा आयते करीमा से वाज़ेह हुआ कि ऐ आ़म लोगो रब तआ़ला तुम्हें ग़ैब पर मुत्तलाअ़ नहीं करता अलबत्ता अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने रसूलों में से जिसे चाहे उसे इ़ल्मे ग़ैब के लिये मुन्तख़ब फ़रमां लेता है और उन्हें ग़ैब का इ़ल्म अ़ता फरमाता है और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तमाम रसूलों में सबसे अफ़ज़ल व आअ़ला हैं कि उन्हें सबसे बढ़कर ग़ैब का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया गया।

इस आयत में सराहतन ये बयान फ़रमाया गया कि अम्बिया किराम अ़लैहिमुस्सलाम को ग़ैब-

पर मुत्तलाअ़ किया जाता है पस ये आयते करीमा अम्बिया किराम अ़लैहिमुस्सलाम के लिये इ़ल्मे ग़ैब के सबूत में क़तई उद्दलाला है और कुरान मजीद की मुताअ़द्दद आयात और बा कसरत हदीस से ये साबित है कि अम्बिया किराम अ़लैहिस्मुसलाम को उ़मूमन और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को खुसूसन ग़ैब का इ़ल्म दिया गया।

➡ मुफ़स्सिरीने किराम फ़रमाते हैं कि हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत की पैदाइश से पहले जब मेरी उम्मत मिट्टी की शक्ल में थी उस वक़्त वो मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश की गई और मुझे इस बात का इ़ल्म दिया गया कि कौन मुझ पर ईमान लायेगा और कौन कुफ़्र करेगा यानी लोगों के ईमान व कुफ़्र और निफ़ाक़ का इ़ल्म अ़ता किया गया और जब ये ख़बर मुनाफ़िक़ीन को पहुँची तो उन्होंने मज़ाक के तौर पर कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का गुमान है कि वो ये जानते हैं कि जो लोग अभी पैदा भी नहीं हुये उनमें से कौन उन पर ईमान लायेगा और कौन कुफ़्र करेगा जबकि हम उनके साथ रहते हैं और वो हमें नहीं जानते इस पर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) मिम्बर पर खड़े हुये और अल्लाह तआ़ाला की हम्दो सना के बाद फ़रमाया कि मुझसे जो कोई भी जो कुछ पूछना चाहे तो वो पूछे रब तआ़ाला–

की क़सम जब तक मैं यहाँ खड़ा हूँ तुम जो भी पूछोगे मैं उसका जवाब दूँगा फिर आपने फ़रमाया

उन लोगों का क्या हाल है जो मेरे इ़ल्म में ताअ़न (एतराज़) करते हैं आज से लेकर क़यामत तक जो कुछ होने वाला है उसमें से कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसका तुम मुझसे सवाल करो और मैं तुम्हें उसकी ख़बर न दे दूँ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह मेरा बाप कौन है आपने इरशाद फ़रमाया तेरा बाप हुज़ाफ़ा है फिर एक दूसरा शख़्स खड़ा हुआ और कहने लगा या रसूलल्लाह मेरा ठिकाना कहाँ है आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तेरा ठिकाना दोज़ख़ है फिर एक तीसरे शख़्स ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे वालिद कौन हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला वसल्लम) ने फ़रमाया कि तेरे वालिद शैबा के आज़ाद कर्दा गुलाम सालिम हैं

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जलाल के सबब बार बार ये ऐअ़लान फ़रमाते थे कि मुझसे जो चाहे पूछ लो और मुझसे सवाल करो हत्ता कि लोंगों ने ज़ारो क़तार रोना शुरु कर दिया चुनांचा हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) घुटनों के बल बैठकर अ़र्ज़ गुज़ार हुये कि हम अल्लाह के रब होने पर

व इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के रसूल होने पर राज़ी हैं (और हमें कुछ नहीं पूछना) रावी कहते हैं हज़रत उ़मर (रजिअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की गुज़ारिश पर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ख़ामोश हो गये फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की कि जिस के क़ब्जे कुदरत में मेरी जान है अभी अभी इस दीवार के सामने मुझ पर जन्नत और दोज़ख़ पेश की गई जबकि मैं नमाज़ पढ़ रहा था और मैंने जन्नत की तरह बेहतर और दोज़ख़ की तरह बदतर कोई चीज़ नहीं देखी फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मिम्बर से उतर आये इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई।

(बुख़ारी–सही–1/380-ह०–540)
(बुख़ारी–सही–6/393-ह०–7089)
(बुख़ारी–सही–6/497-ह०–7291)
(मुस्लिम–सही–6/53-ह०–6121)
(मुस्नद अहमद–5/325-ह०–12067)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–6/286-ह०–3201)
(तबरानी मुअ़जम औसत–9/72-ह०–9155)

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये फ़रमाना कि जो चाहो मुझसे पूछलो ये उसी वक़्त दुरस्त हो सकता है कि जब आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को हर चीज़ का इ़ल्म हो ख़्वाह अहकामे शरीअ़त

से मुतालिक सवाल किये जायें या माज़ी और मुस्तक़बिल की ख़बरों से मुताअ़ल्लिक़ सवाल किये जायें या फिर मख़्फ़ी बातों से मुताअ़ल्लिक़ सवाल किये जायें पस माअ़लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने प्यारे हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हर ज़ाहिर व मख़्फ़ी शैः का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को क़यामत तक के हर शख़्स के तमाम अहवाल व कैफ़ियात की ख़बर दी और आप हर एक के ईमान व कुफ़्र व निफ़ाक़ और अच्छे व बुरे आअ़माल को अच्छी तरह जानते हैं और तमाम आ़लम के ईमान और आअ़माल के मदारिज (दर्जे) को जानते हैं।

तभी तो आप क़यामत के दिन गवाही देंगे और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को तमाम आ़लम की ऐसी मख़्फ़ी व पोशीदा बातों पर मुत्तलाअ़ फ़रमाया जो दूसरों को माअ़लूम न हो सकीं देखो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की माँ के सिवा कोई नहीं जानता था कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के बाप कौन हैं मगर हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) बा इज़्न व अ़ताये पर'वर दिगार इस पर भी मुत्तलाअ़ हैं हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब का इन्कार करना–

या शक व शुबहा करना या उसका मज़ाक उड़ाना मुनाफ़िक़ों का काम है जैसा कि इस आयते के शाने नुजूल से माअ़लूम हुआ और जुमला सहाबा किराम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम का ये अ़क़ीदा है कि आसमान व ज़मीन में कोई भी चीज़ मख़्फ़ी नहीं जो रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इ़ल्म में न हो।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने एक सवाल किया कि या रसूलल्लाह कोई ऐसा शख़्स भी है जिसकी नेकियाँ आसमान के तारों के बराबर हों तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ वो उ़मर है ये सवाल उसी से हो सकता है जिसे हर शख़्स की खुली व छुपी नेकियों की ख़बर हो और आसमान के तारों की गिनती भी माअ़लूम हो।

इरशादे बारी तआ़ला है:-

(वो) ग़ैब का जानने वाला है पस वो अपने ग़ैब पर किसी (आ़म शख़्स) को मुत्तलाअ़ नहीं करता सिवाये अपने पंसदीदा रसूलों के (उनको मुत्तलाअ़ अ़लल ग़ैब फ़रमाता है) (सू०-जिन्न-72/26)

मज़कूरा आयते करीमा रसूलों के लिये इ़ल्मे ग़ैब को साबित करती है और जब रसूलों के लिये इ़ल्मे ग़ैब साबित है तो सय्यदुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि-

वसल्लम) तमाम अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) से अफ़ज़लो आअ़ला हैं तो आपका इ़ल्म अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) से बहुत बुलन्द व बाला और अरफ़ाअ़ व आअ़ला है अल्लाह तबारक व तआ़ाला आ़लिमुल ग़ैब है वो अपने उस ग़ैब पर जिसका इ़ल्म उसके साथ ख़ास है उस पर अपने पंसदीदा रसूलों को मुत्तलाअ़ फ़रमाता है।

बाअ़ज़ बातिल अ़क़ीदा रखने वाले लोग इस आयत से इस्तिदलाल करते हुये औलिया किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहिम) के इ़ल्मे ग़ैब की नफ़ी करते हैं और वो गुमराह लोग कहते हैं कि इस आयत के मुताबिक़ औलिया किराम को ग़ैब का इ़ल्म नहीं हो सकता व उनकी जुमला करामात का इन्कार करते हैं तो इसका जवाब ये है कि इस आयत में ग़ैब से मुराद आ़म ग़ैब नहीं है कि जिसका माअ़नी ये हो कि कोई भी ग़ैब रसूलों के सिवा किसी को अ़ता नहीं किया जाता जिससे कि मुत्लक़न औलिया के उ़लूमे ग़ैब की नफ़ी हो सके बल्कि कुछ मख़्सूस ग़ैब ऐसे हैं जो कि रसूलों के अ़लावा किसी को इत्तिलाअ़ नहीं किये जाते।

यानी इस आयत में ग़ैब से मुराद उ़मूम नहीं है बल्कि इस आयत में ग़ैब से मुराद मख़्सूस ग़ैब है और इस आयत का माअ़नी ये है कि अल्लाह तआ़ाला अपने मख़्सूस ग़ैब को किसी पर ज़ाहिर नहीं करता मगर जो उसके पंसदीदा रसूल हैं उन पर ज़ाहिर फ़रमाता है और अल्लाह तबारक व-

तआ़ला अपने मुन्तख़ब और पसंदीदा रसूलों को बिला वास्ता ग़ैब पर मुत्तलाअ़ फ़रमाता है और अपने औलिया को अपने रसूलों के तवस्सुल और फ़ैज़ से और फ़रिश्तों के ज़रिये और वसीले से ग़ैब का इल्म अ़ता फ़रमाता है और कभी उनको इल्हाम किया जाता है और कभी उनके दिलों में कोई बात डाल दी जाती है।

यानी अल्लाह तआ़ला अपने ग़ैब पर अम्बिया किराम अ़लैहिमुस्सलाम को भी मुत्तलाअ़ फ़रमाता है और औलिया किराम को भी मुत्तलाअ़ फ़रमाता है और उन दोनों में फ़र्क़ ये है कि औलिया को जो ग़ैब की इत्तिलाअ़ दी जाती है वो ज़ईफ़ होती है और इसके बर अ़क्स अम्बिया किराम को जो ग़ैब की इत्तिलाअ़ दी जाती है वो औलिया किराम की इत्तिलाअ़ से बहुत क़वी व मुस्तहकम होती है

औलिया-ए-किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) को उ़लूमे ग़ैब पर मुत्तलाअ़ किया जाता है मगर ग़ैब की बातों को ज़ाहिर करने के एतबार से अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) का इ़ल्मे ग़ैब औलिया-ए-किराम से बहुत बुलन्द व बाला और अरफ़ाअ़ व आअ़ला होता है और अम्बिया किराम के तवस्सुल और इन्हीं के फ़ैज़ से औलिया किराम को इ़ल्मे ग़ैब अ़ता किया जाता है और अल्लाह तआ़ला अपने रसूलों को उन गुयूब पर मुत्तलाअ़ फ़रमाता है जिन गुयूब पर उसकी हिकमत तक़ाज़ा करती है ये बात कुरान व अहादीस से साबित है

कि अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया-ए-इज़ाम को उ़लूमे ग़ैब हासिल होता है बल्कि अ़ाम मुसलमानों को भी इ़ल्मे ग़ैब हासिल होता है क्योंकि हर मुसलमान को रब तअ़ाला की ज़ात व सिफ़ात और फ़रिश्तों व जन्नत व दोज़ख़ बग़ैराह का इ़ल्म है और ये सब इ़ल्मे ग़ैब है मगर बाअ़ज़ ग़ैब वो हैं जो अ़ाम लोगों को हासिल नहीं होते सिवाये अल्लाह तबारक व तअ़ाला के मुन्तख़ब और पंसदीदा रसूलों के ताकि उस ग़ैब से उनकी नबूवत व रिसालत पर इस्तिदलाल किया जा सके और वो ग़ैब उनके लिये मोअ़जिज़ाह हो जायें और अल्लाह तअ़ाला ने अपने पंसदीदा रसूलों को ख़ास इ़ल्मे ग़ैब के लिये चुन लेता है फिर उनको जितना चाहता उतना इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाता है।

अल्लाह तअ़ाला अ़लल इत्लाक़ इ़ल्मे ग़ैब के साथ मुन्फ़रिद है और उसके ख़ास अ़ताई इ़ल्मे ग़ैब पर मख़लूक़ में से कोई भी कामिल मुत्तलाअ़ नहीं होता कि उसको मुकम्मल इन्किशाफ़े ताम हो जाये सिवाये उनको जिनको अल्लाह तअ़ाला ने चुन लिया है और वो उसके पंसदीदा रसूल हैं ताकि वो उनको अपने ख़ास ग़ैब के उ़लूम पर मुत्तलाअ़ फ़रमाये जो उनकी नबूवत व रिसालत से मुताअ़ल्लिक़ हों और हमारे रसूल नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को अल्लाह तअ़ाला ने तमाम रसूलों से ज़्यादा इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया जो तमाम मखलूक़ के इल्म से ज़्यादा है।

मुस्तक़बिल की ख़बरें ग़ैब होती हैं

इरशादे बारी तआला हैः-

(ऐ मुसलमानो) जब तुम उनकी तरफ़ (इस सफ़रे तबूक से) लौट कर जाओगे तो वो तुमसे बहाने बनायेंगे (ऐ हबीब) आप फ़रमादें कि बहाने मत बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारी बात पर यक़ीन नहीं करेंगे हमें अल्लाह ने तुम्हारे हालात से बा ख़बर कर दिया है और अब (आइन्दा) तुम्हारे अ़मल (दुनियाँ में) अल्लाह देखेगा और उसका रसूल भी (देखेगा) फिर तुम (आख़िरत में भी) हर पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले रब की तरफ़ लौटाये जाओगे और वो तुम्हें उन तमाम (आअ़माल) से ख़बरदार फ़रमायेगा जो तुम किया करते थे।
(सू०-तौबा-9/94)

मज़कूरा आयते करीमा में मुनाफ़िक़ों की आइन्दा के हरकात की ग़ैबी ख़बर दी गई कि ऐ हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) आप और आपके सहाबा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) जब गज़वा-ए-तबूक से वापस मदीना मुनव्वरा पहुँचेंगे तो गज़वा से रह जाने वाले मुनाफ़िक़ीन झूठे बहाने बनाकर और बातिल उज़्र पेश करके आप सब को राज़ी करने की कोशिश करेंगे तो ऐ हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) आप उनसे फ़रमां देना कि बहाने मत बनाओ और जो

भी उज़्र तुम पेश कर रहे हो हम उसकी हरगिज़ तस्दीक़ न करेंगे और तुमने जो कुछ किया है रब तआ़ला ने तुम्हारी सारी खुली व छुपी हालत की हमें सारी ख़बर दे दी है और हम तुम्हारे दिलों के असरार जानते हैं यानी अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी सारी ख़बरें दे दी हैं बा ज़रिया-ए-वही या बा ज़रिया-ए-कशफ़ व इल्हाम और हम तुम्हारे दिलों के तमाम पोशीदा बातों की ख़बर रखते हैं।

"आ़लिमिल ग़ैबि बश्शहादति" इस आयत में अल्लाह तआ़ला की एक सिफ़त आ़लिमुल ग़ैब बयान फ़रमाई गई है आ़लिमुल ग़ैब का इत्लाक़ अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ास है और अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाने से अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम को कसीर ग़ैबो का इ़ल्म है और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) बेशुमार गैबों वमा काना मा युकूनु के आ़लिम हैं और अल्लाह तआ़ला की अ़ता से रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को इतने ग़ैबों का इ़ल्म है कि जिनका शुमार रब तआ़ला ही जानता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

मुनाफ़िक़ीन इस बात से डरते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरत नाज़िल कर दी जाये जो उन्हें उन बातों से ख़बरदार करदे जो उन मुनाफ़िक़ों के दिलों में मख़्फ़ी हैं (ऐ हबीब) आप फ़रमां दें तुम मज़ाक करते रहो बेशक अल्लाह वो (बात) ज़ाहिर

फ़रमाने वाला है जिससे तुम डरते हो और अगर आप उनसे दरयाफ़्त करेंगे तो वो ज़रुर कहेंगे कि हम तो सिर्फ़ (सफ़र करने के लिये) बातचीत और दिल लगी करते थे तो ऐ हबीब आप फ़रमां दें क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूलों के साथ मज़ाक कर रहे थे (और अब) तुम माअ़ज़रत न करो बेशक तुम अपने ईमान (के इज़्हार) के बाद काफ़िर हो गये हो अगर हम तुम में से एक गिरोह को मुआ़फ़ भी कर दें (तब भी) दूसरे गिरोह को अ़ज़ाब देंगे इस वजह से कि वो मुजरिम थे। (सू०-तौबा-9/64-66)

मुफ़स्सिरीने किराम ने इन आयात की मुख़्तलिफ़ तफ़्सीरें की हैं मगर उनमें जो क़वी है उसका यहाँ ज़िक्र किया जा रहा है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने सहाबा किराम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के साथ गज़वऐ तबूक में जा रहे थे और आपके आगे कुछ मुनाफ़िक़ चल रहे थे इमाम कुरतबी फ़रमाते हैं कि दो मुनाफ़िक़ों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) मुल्के फ़ारस व रोम के ख़्वाब देख रहे हैं कि हम वो भी फ़तह कर लेंगे भला वो मुल्क कहाँ और ये कहाँ उनमें से एक शख़्स उन दोनों की इस बात को ख़ामोशी से सुन रहा था और उनकी इस बात पर हंस रहा था कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को इस बात पर मुत्तलाअ़ फ़रमां दिया

पस हूज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उन सवारों को रोको और हमारे पास हाज़िर करो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हुक्म के मुताबिक़ उन सवारों को आप की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर किया गया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उनसे पूछा कि क्या तुमने इस इस तरह कहा है उन्होंने जवाब दिया कि ऐ-अल्लाह के रसूल हम तो महज़ रास्ता तय करने के लिये यूँ ही हंसी दिल्लगी कर रहे थे इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि अब तुम बहाने मत बनाओ बेशक तुम अपने ईमान (के इज़हार) के बाद काफ़िर हो गये हो अगर हम तुममें से एक गिरोह जिसने अपनी ज़बान से गुस्ताख़ी का कोई कलमा नहीं कहा था मगर ख़ामोशी से सुन रहा था और हंसता था उसे मुआ़फ़ भी कर दें तब भी दूसरे गिरोह को अ़ज़ाब देंगे इस वजह से कि वो मुजरिम थे।

तो माअ़लूम हुआ कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ग़ैब का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया है कि जो तन्हाई में बातें की जायें आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को उनकी ख़बर है मुनाफ़िक़ीन की छुपी हुई चीज़ यानी निफ़ाक़ और बुग्ज़ और अ़दावत जो वो मुसलमानों के साथ रखते थे और उसको छुपाया करते थे हालांकि वो लोग हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की सच्चाई-

और वही और ग़ैब की ख़बरों की दुरस्त समझते थे मगर महज़ हसद व इ़नाद की वजह से हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) के इन्कारी थे हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के मोअ़जिज़ात को देखने और आपकी ग़ैबी ख़बरें सुनने और वाक़ैअ़ होने के बाद मुनाफ़िक़ों को ये अंदेशा हो गया था कि कहीं अल्लाह तआ़ला कोई ऐसी सूरत नाज़िल न फ़रमादे जिससे उनके दिलों के असरार (पोशीदा बातें) ज़ाहिर कर दी जायें और उनकी रुसवाई हो और उनके इस अंदेशे का ज़िक्र करने के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) आप उन मुनाफ़िक़ों से फ़रमादें कि तुम्हें जो हंसी मज़ाक करना है सो कर लो मगर बेशक अल्लाह तआ़ला उस चीज़ को ज़ाहिर फ़रमाने वाला है जिसके ज़ाहिर होने से तुम डरते हो हालांकि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को उनकी मुनाफ़िक़त पहले ही से माअलूम थी।

‘‘अल्लाह और उसके रसूल और उसकी आयात का मज़ाक उड़ाने से मुराद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ग़ैबी ख़बरें हैं कि अ़नक़रीब फ़ारस व रोम हमको अ़ता होंगे और वहाँ इस्लामी हुकूमत होगी और इन आयात में मुनाफ़िक़ीन की पोशीदा बातों के भेद खोले गये हैं और उनके राज़ों से पर्दा उठाया गया है व उनके कुफ़्र व निफ़ाक़ और उनके करतूत ज़ाहिर किये गये हैं और मुनाफ़िक़ीन को रुसवा किया गया।

अम्बिया किराम और इत्तिलाअ़ अ़लल ग़ैब

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और इसी तरह हमनें इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को आसमानों व ज़मीनों की अ़ज़ीम सल्तनत दिखाईं हैं और (ये) इसलिये कि वो ऐ़नुल यक़ीन वालों में से हो जायें। (सू०–अनआ़म–6/75)

हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) अल्लाह तआ़ला के निहायत बरगज़ीदा और मुक़र्रब नबी व रसूल हैं अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिससलाम) को तमाम आसमानों का मुशाहदा कराया यहाँ तक कि आप ने अ़र्श व कुर्सी और आसमानों के तमाम अ़जाइब व जन्नत में अपने मक़ाम का मुशाहदा फ़रमाया फिर अल्लाह तआ़ला ने आप (अ़लैहिस्सलाम) को ज़मीन का मुशाहदा कराया यहाँ तक कि आपने सबसे नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीन के तमाम अ़जाइब देखे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस का मक़सद भी बयान फ़रमाया कि हमने ये निशानियाँ व ज़मीनो आसमान की मख़्लूक़ का मुशाहदा इसलिये कराया कि वो ये सब देखकर यक़ीन करने वालों में से हो जायें और अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के लिये हर ज़ाहिर व मख़्फ़ी चीज़ आपके सामने कर दी यानी हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के लिये हर ज़ाहिर व पोशीदा शैः

मुन्कशिफ़ कर दी और कोई शैः आप पर मख़्फ़ी न रही इससे पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिससलाम के लिये ये सब कुछ ग़ैब था जिस पर आपको मुत्तलाअ़ किया गया।

चुनाँचा हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिससलाम) को एक चट्टान पर खड़ा किया गया और फिर फ़रमाया गया कि ऊपर देखो तो आपको अ़र्श व कुर्सी और लौह व क़लम यहाँ तक कि वहाँ की सारी मख़लूक़ नज़र आ गई फिर फ़रमाया गया कि नीचे देखो तो आपने ज़मीन के नीचे देखा तो आपने ज़मीन के नीचे आख़िरी हिस्से तक ज़र्रा ज़र्रा देख लिया।

इस आयते करीमा में यक़ीन से मुराद ऐ़नुल यक़ीन है यानी आँखों देखा यक़ीन और अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को ये सब इसलिये दिखाया ताकि उन्हें अल्लाह तआ़ला की वहदानियत की माअ़रिफ़त और अपनी क़ौम की गुमराही और जहालत पर बसीरत हासिल हो और वो अपनी क़ौम के सामने इन चीज़ों को रब तआ़ला की वहदानियत पर दलील बनायें और खुद उन्हें ऐ़नुल यक़ीन हासिल हो तो माअ़लूम हुआ कि रब तआ़ला ने इब्राहीम (अ़लैहिससलाम) को इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया कि आपने ज़मीनो आसमान के ज़र्रे ज़र्रे और तमाम मख़लूक़ को अपनी आँखों से देखा और हमारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को

हर शैः दिखाई भी गई और आसमानों व जमीनों व जन्नत, दोज़ख़, अ़र्श कुर्सी वग़ैराह की सैर भी कराई गई जहाँ हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिससलाम) की निगाह पहुँची वहाँ हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) खुद पहुँचे बल्कि आप ला मकान और सुम्मद्ना फ़तादल्ला फ़काना क़ाबा क़ौसेनि औ अद्ना के मक़ाम तक पहुँचे नबी और उम्मत के ईमान में फ़र्क़ होता है नबी का ईमान ऐ़नुल यक़ीन के दरजे का होता है यानी आँखों देखा यक़ीन व उम्मत का ईमान इ़ल्मुल यक़ीन के दरजे का होता है यानी सुनकर यक़ीन होना और हमारे आक़ा हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम का ईमान हक़्क़ुल यक़ीन के दरजे का है कि अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को अ़ालमे ग़ैब की सैर कराई और तमाम गुयूब का इ़ल्म अ़ता फरमाया।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

और जब मूसा (अ़लैहिस्सलाम) अपनी जवानी को पहुँचे व (सन्ने) इअ़तिदाल पर आ गये तो हमने उन्हें हिकमत और इ़ल्म से नवाज़ा।
(सू०-क़सस-28/14)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

तो दोंनों ने (वहाँ) हमारे बन्दों में से एक (ख़ास) बन्दे (ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम) को पा लिया जिसे हमने अपनी बारगाह से खुसूसी रहमत अ़ता की थी और हमने उसे इ़ल्मे लदुन्नी (यानी असरार

व मआ़रिफ़ का इल्हामी इ़ल्म) सिखाया था उससे मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा क्या मैं आपके साथ इस शर्त पर रह सकता हूँ कि आप मुझे (भी) उस इ़ल्म में से कुछ सिखायें जो आपको सिखाया गया है उस (यानी ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम) ने कहा बेशक आप मेरे साथ रहकर हरगिज़ सब्र न कर सकेंगे और आप उस (बात) पर कैसे सब्र कर सकते हैं जिसे आप (पूरे तौर पर) अपने इहाता–ए–इ़ल्म में नहीं लाये होंगे मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा इन्शा अल्लाह आप मुझे ज़रुर साबिर पायेंगे और मैं आपकी किसी बात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करुँगा (ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने) कहा पस अगर आप मेरे साथ रहें तो मुझसे किसी (भी) चीज़ के बाबत सवाल न करें यहाँ तक कि मैं खुद आपसे उसका ज़िक्र करुँ।

पस (वो) दोनों चल दिये यहाँ तक कि जब (वो) दोनों एक कश्ती में सवार हुये (तो ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने) उस कश्ती में शिगाफ़ कर दिया मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा क्या आपने इसलिये इसे (शिगाफ़ करके) फाड़ डाला है कि आप कश्ती वालों को ग़र्क़ कर दें बेशक आपने बड़ी अ़जीब बात की है (ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने कहा) क्या मैंने नहीं कहा था कि आप मेरे साथ रहकर हरगिज़ सब्र न कर सकेंगे मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा आप मेरी भूल पर मेरी गिरफ़्त न करें और मेरे (इस) मुआ़मले में मुझे ज़्यादा मुश्किल में न डालें फिर वो दोनों चल दिये यहाँ तक कि वो–

दोनों एक लड़के से मिले तो (ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने) उसे क़त्ल कर डाला मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा क्या आपने बे गुनाह जान को बग़ैर किसी जान (के बदले) के क़त्ल कर दिया बेशक आपने बड़ा ही सख़्त काम किया है ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने कहा क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि आप मेरे साथ रहकर हरगिज़ सब्र न कर सकेंगे मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा अगर (अब) मैं इसके बाद आपसे किसी चीज़ की निसबत सवाल करूँ तो आप मुझे अपने साथ न रखियेगा फिर दोनों चल दिये यहाँ तक कि जब दोंनों एक बस्ती वालों के पास आ पहुँचे तो दोनों ने वहाँ के बाशिन्दों से खाना तलब किया तो उन लोगों ने उन दोंनों की मेज़बानी करने से इन्कार कर दिया फिर दोनों ने वहाँ एक दीवार पाई जो गिरी जा रही थी तो (ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने) उसे सीधा कर दिया पस मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा अगर आप चाहते तो इस ताअ़मीर के बदले मजदूरी ले लेते (ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने) कहा ये मेरे आपके दरमियान जुदाई का वक़्त है अब मैं आपको उन बातों की हक़ीक़त से आगाह किये देता हूँ जिन पर आप सब्र न कर सके।

वो जो कश्ती थी सो वो चन्द ग़रीब लोगों की थी वो दरिया में महनत मजदूरी किया करते थे पस मैंने इरादा किया कि उसे ऐ़बदार कर दूँ और (उसकी वजह ये थी कि) उनके आगे एक जाबिर बादशाह (खड़ा) था जो हर (बे ऐ़ब कश्ती)

को जबर दस्ती छीन रहा था और वो जो लड़का था तो उसके माँ बाप साहिबे ईमान थे पस हमें अंदेशा हुआ कि ये (अगर ज़िन्दा रहा तो काफ़िर बनेगा और) उन दोंनों को (बड़ा होकर) सरकशी और कुफ़्र में मुब्तिला कर देगा पस हमने इरादा किया कि उनका रब उन्हें (ऐसा) बदल अ़ता करे जो पाकीज़गी में (भी) उस (लड़के) से बेहतर हो और शफ़क़त व रहम दिली में (भी वलिदैन से) क़रीब तर हो।

और वो जो दीवार थी तो वो शहर में (रहने वाले) दो यतीम बच्चों की थी और उसके नीचे उन दोनों के लिये एक ख़ज़ाना (मदफून) था और उनका बाप एक सालेह शख़्स था सो आपके रब ने इरादा किया कि वो दोनों अपनी जवानी को पहुँच जायें और आपके रब की रहमत से वो अपना ख़ज़ाना (खुद ही) निकालें।
(सू०–कह्फ़–18/65 ता 82)

एक मर्तबा हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने बनी इसराईल की एक जमाअ़त को वाअ़ज़ फ़रमाया इसके बाद किसी शख़्स ने सवाल किया क्या आपसे बड़ा भी कोई आ़लिम है तो हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया नहीं तो अल्लाह तआ़ला ने आपकी तरफ़ वही फ़रमाई कि ऐ मूसा तुमसे बड़े आ़लिम ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) हैं पस मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उनका पता पूछा इरशाद फ़रमाया गया कि वो यानी ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम)

मजमउ़ल बहरैन (यानी दो समुन्दरों की मिलने की जगह) में रहते हैं और वहाँ की निशानी ये बताई कि जहाँ भुनी हुई मछली ज़िन्दा होकर दरिया में चली जाये और पानी में सुरंग बन जाये चुनांचा हज़रत मूसा (अ़लैहिससलाम) अपने ख़ादिम के साथ हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) से मुलाक़ात के लिये मुसलसल सफ़र किया व उनसे मुलाक़ात की इसके बाद के वाक़्आ़त मज़कूरा आयात में बयान हुये हैं।

‘‘जिसे हमने अपनी बारगाह से रहमत अ़ता की’’ इससे मुराद नबूवत व इ़ल्म से मुराद इ़ल्मे लदुन्नी है जो बन्दे को वही और इल्हाम के ज़रिये से अ़ता किया जाता है यानी हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) नबी हैं और उनको ख़ास तौर पर इ़ल्मे ग़ैब अ़ता किया गया फिर जब वो दोंनों मिले तो हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से कहा जो इ़ल्म अल्लाह तआ़ला ने मुझको अ़ता फ़रमाया है वो आप नहीं जानते और जो इ़ल्म आप को अ़ता फ़रमाया है वो मैं नहीं जानता (बुख़ारी–सही–4/651-ह०–4725) हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने जो इ़ल्म अपने लिये ख़ास फ़रमाया उससे मुराद इ़ल्मे बातिन व उमूरे ग़ैब का माअ़लूम हो जाना है।

हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) का ये अंदेशा इस वजह से था कि वो अल्लाह त़आला के ख़बर देने की वजह से उस लड़के के बातिनी हाल को–

जानते थे इसलिये उसका क़त्ल कर दिया हज़रत उबई बिन काअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस लड़के को हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने क़त्ल किया था वो काफ़िर पैदा किया गया था और अगर वो ज़िन्दा रहता तो वो जबरदस्ती अपनी माँ बाप को सरकशी व कुफ़्र की तरफ़ ले जाता।
(मुस्लिम–सही–5/135-ह०–6766)
(अबू दाऊद–सुनन–6/574-ह०–4705)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/719-ह०–3150)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस दीवार के नीचे जो हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने बनाई थी उसके नीचे साने व चाँदी का एक ख़ज़ाना था
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/720-ह०–3152)

हुस्ने अदब का तक़ाज़ा :– ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने जब कश्ती को तोड़ा तो कहा कि मैंने उसमें ऐ़ब डालने का इरादा किया और जब दो यतीम लड़कों की दीवार को जोड़ा तो कहा कि आपके रब ने इरादा किया कि वो दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुँच जाये और आपके रब की रहमत से अपना ख़ज़ाना निकालें अब यहाँ सवाल ये है कि कश्ती तोड़ने के मुताअ़ल्लिक़ हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि मैंने इरादा किया और

दीवार जोड़ने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि आपके रब ने इरादा किया जबकि ज़ाहिर के एतबार से दोनों काम हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने किये थे तो दोनों के मुताअ़ल्लिक़ कहते कि मैंने इरादा किया और हक़ीक़त के एतबार से दोनों काम रब तआ़ला ने किये थे तो दोनों के मुतअ़ल्लिक़ कहते कि आपके रब ने इरादा किया तो इसका जवाब ये है कि हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने तोड़ने की निस्बत अपनी तरफ़ की और जोड़ने की निस्बत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ की और यही हुस्ने अदब का तक़ाज़ा है।

इसी तरह जब उस लड़के को क़त्ल करने की वजह बयान की तो कहा कि हमें ये ख़तरा हुआ कि वो लड़का अपने माँ बाप को सरकशी और कुफ़्र में मुब्तिला कर देगा और जब उसके माँ बाप को उससे बेहतर नेक लड़के के पैदा होने का ज़िक्र किया तो कहा कि हमने ये इरादा किया कि उनका रब उन्हें इस लड़के के बदले में उनको बेहतर और नेक लड़का अ़ता फ़रमायेगा इसमें क़त्ल करने की निस्बत अपनी तरफ़ की और उस लड़के के बदले नेक बेटा देने की निस्बत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ की।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम्हें जो भलाई पहुँचती है वो अल्लाह की तरफ़ से होती है और तुम्हें जो बुराई पहुँचती है वो तुम्हारे नफ़्स की वजह से होती है(सू०-निसा-4/79)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और जब मैं बीमार होता हूँ तो वो मुझे शिफ़ा देता है। (सू०–शुअ़रा–26/80)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
(ऐ हबीब यूँ) अ़र्ज़ कीजिये ऐ अल्लाह सब जहान के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत अ़ता फ़रमां दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई (व ख़ैर) तेरे ही दस्ते कुदरत में है।
(सू०–आले इमरान–3/26)

ख़ैर व शर दोनों अल्लाह तआ़ाला के हाथ में है और उसके क़ब्ज़े कुदरत में है लेकिन अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने यहाँ सिर्फ़ ख़ैर का ज़िक्र फ़रमाया शर का ज़िक्र नहीं किया इसकी भी वजह यही है कि अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ हुस्न और ख़ैर की निस्बत की जाये और ऐ़ब व शर की निसबत अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ न की जाये।

इ़ल्मे लदुन्नी की ताअ़रीफ़ :– जो इ़ल्म किसी बशर के वास्ते से हासिल वो इ़ल्मे कस्बी है और जो इ़ल्म किसी वास्ते के बग़ैर हासिल हो वो इ़ल्मे लदुन्नी है वही व इल्हाम और फ़िरासत (दानाई) ये इल्मे लदुन्नी की अक़साम हैं और इ़ल्मे लदुन्नी को इ़ल्मुल हक़ीक़त और इ़ल्मुल बातिन भी कहते हैं इमाम मुहम्मद गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ाला–

अ़लैहि) इ़ल्मुल मुकाशफ़ा और इ़ल्मे बातिन (इ़ल्मे लदुन्नी) की ताअ़रीफ़ में लिखते हैं कि हम इ़ल्मुल मुकाशफ़ा से ये मुराद लेते हैं कि हक़ इस तरह जली और वाज़ेह हो जाये कि गोया हम उसका आँखों से मुशाहदा कर रहे हों और ये उस वक़्त हो सकता है जब इन्सान के दिल पर दुनियाँ का मैल कुचैल का जंग न हो और अल्लाह तअ़ाला की सिफ़ात और उसके अहकाम की माअ़रिफ़त पर दिल के आइने में ख़बीस चीज़ों के जो भी हिजाबात हैं वो ज़ायल हो जायें और ये उस वक़्त होगा जब इन्सान अपने आपको शहबात व नफ़्स की ख़्वाहिशात की इत्तेबाअ़ से रोक ले व अपने सब अहवाल व मुअ़ामलात में हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम की इताअ़त करे फिर उसके दिल में हक़ रौशन हो जायेगा और उस पर हक़ मुन्कशिफ़ हो जायेगा

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने फ़रमाया ‘‘कि हमने उनको (यानी ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम को) अपने पास से इ़ल्मे (लदुन्नी) सिखाया’’ तो इससे माअ़लूम हुआ कि उनको उ़लूमे ग़ैब रब तअ़ाला से बग़ैर वास्ता के हासिल हुये और इ़ल्म एक नूर है और अल्लाह तअ़ाला जिसे इ़ल्मे लदुन्नी अ़ता फ़रमाता है उसकी कुव्वते अ़क़लिया क़वी हो जाती है और अनवारे इलाहिया उसकी अ़क़्ल में रौशन हो जाते हैं और बग़ैर किसी वास्ते के और बग़ैर सई (दौड़, धूप, कोशिश) व बग़ैर तलब के उ़लूम व मअ़ारिफ़ हासिल हो जाते हैं और इनको उलूमे लदुन्निया कहते हैं।

ज़ूलूमे लदुन्निया के हामिलीन के दरजात और मरातिब मुख़्तलिफ़ होते हैं और ज़ूलूमे लदुन्निया के अनवाअ़ भी मुख़्तलिफ़ होते हैं मलायका और अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) और औलिया कामिलीन ज़ूलूमे लदुन्निया के हामिल हैं व हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को शरीअ़त का इ़ल्म दिया गया था यानी अल्लाह तआ़ला के वो अहकाम यानी अहकामे शरीअ़त जिन पर अ़मल करके इन्सान दुनियाँ और आख़िरत की सआ़दत हासिल करता है

और हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) को वो इल्म अ़ता किया गया जिसमें इन्सान का दख़ल व इख़्तियार नहीं होता जैसे कुदरती आफ़ात और कुदरती इनआ़मात और बारिश व तूफ़ान और ज़लज़ले और क़हत् और मौत व हयात और मर्ज़ व सेहत और हादसात बग़ैराह ये तकवीनी उमूर हैं इनका इ़ल्म हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) को दिया गया था और उसकी हिकमतों का इ़ल्म भी अ़ता किया गया था ये दोनों ज़ूलूमे लदुन्निया हैं।

तो माअ़लूम हुआ कि हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया था और आपको वो ज़ूलूम सिखाये थे जो अल्लाह तआ़ला के साथ मुख़्तस हैं और बेशक अल्लाह तआ़ला अपने मख़्सूस व मुक़र्रब बन्दों के दिलों में अपने अनवार व असरार व मआ़रिफ़ और ज़ूलूमे ग़ैब के ख़ज़ाने अ़ता फ़रमाता है।

जितने भी अम्बिया किराम तशरीफ़ फ़रमां हुये उनके तीन तबक़े ही रहे हैं (1) अहले शरीअ़त (2) अहले तरीक़त (3) व अहले माअ़रिफ़त और अक्सर अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) अहले शरीअ़त थे कि उनकी वही सिर्फ़ कानून थी जैसे आदम, नूह, मूसा (अ़लैहिमुस्सलाम) और अहले तरीक़त अम्बिया किराम की वही सिर्फ़ बातिनी असरार व रुमूज़ पर थी और बातिनी तरीक़े पर इस्लाह फ़रमाते थे जैसे ख़िज़्र, दाऊद, इलियास, इदरीस (अ़लैहिमुस्सलाम) और अहले हक़ीक़त व माअ़रिफ़त सिर्फ़ तौहीदे इलाही व तर्के दुनियाँ की तल्क़ीन फ़रमाने के लिये थे जैसे शुऐ़ब व उज़ैर व ज़करिया व ईसा (अ़लैहिमुस्सलाम) और अहले शरीअ़त के अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के वारिस उ़ल्मा, फुक़हा होते हैं और अहले तरीक़त में सूफ़िया-ए-किराम व औलिया-ए-इ़ज़ाम बनते हैं और अहले माअ़रिफ़त में आ़बदीन, ज़ाहिदीन व ख़लवत नशीन पैदा होते हैं मगर ये तो सरवरे कायनात सय्यदुल अम्बिया (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की शान है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आपको शरीअ़त, तरीक़त, हक़ीकत व माअ़रिफ़त वाली नबूवते कामिला अ़ता फ़रमाई और वही जली और वही ख़फ़ी के ख़ज़ाने अ़ता फ़रमाये और बेशुमार खुसूसी उ़लूमे ग़ैब के शरफ़ से बह्रावर फ़रमाया।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने मुन्तख़ब व पसंद किये हुये अम्बिया व रुसुल को उनकी शाने

नबूवत व मरातिब व दरजात के मुताबिक़ इ़ल्मो हिकमत व मोअ़जिज़ात व कमालात से सरफ़राज़ फ़रमाया हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) को अल्लाह तआ़ला ने बेशुमार मोअ़जिज़ात व कमालात और उ़लूमे ग़ैब व मख़्फ़ी चीज़ों का कसीर इ़ल्म अ़ता फ़रमाया जिसका ज़िक्र कुरान मजीद में कुछ इस तरह है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और वो बनी इसराईल की तरफ़ रसूल होगा (वो उनसे कहेगा) कि बेशक मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से एक निशानी लेकर आया हूँ मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्दे की शक्ल जैसा (एक पुतला) बनाता हूँ फिर मैं उसमें फूँक मारता हूँ सो वो अल्लाह के हुक्म से फ़ौरन उड़ने वाला परिन्दा हो जाता है और मैं मादर ज़ाद अन्धे व सफ़ेद दाग़ वाले को शिफ़ायाब करता हूँ और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को ज़िन्दा कर देता हूँ और जो कुछ तुम खाकर आये हो और जो कुछ तुम अपने घरों में जमाअ़ करते हो मैं तुम्हें (वो सब कुछ) बता देता हूँ बेशक इसमें तुम्हारे लिये निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।
(सू०-आले इमरान-3/49)

मज़कूरा आयते करीमा मे हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) के पाँच मोअ़जिज़ात बयान हुए हैं (1) मिट्टी से परिन्दे की सूरत बनाकर फूँक मारना और उससे हक़ीक़ी परिन्दा-

बन जाना (2) पैदायशी अन्धों को बीनाई अ़ता कर देना (3) कोढ़ के मरीज़ शिफ़ायाब कर देना (4) मुर्दों को ज़िन्दा कर देना (5) ग़ैब की ख़बरें देना और हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) आदमी को ये बता देते थे जो वो कल खा चुका है और जो आज खायेगा और जो अगले वक़्त के लिये उसने जमाअ़ कर रखा है हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास बहुत से बच्चे जमाअ़ हो जाते थे तो हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) उन्हें बताते थे कि तुम्हारे घर फुलाँ चीज़ तैयार हुई है और तुम्हारे घर वालों ने फुलाँ फुलाँ चीज़ खाई है और फुलाँ चीज़ तुम्हारे लिये बचाकर रखी है फिर जब बच्चे घर जाते व घर वालों से उस चीज़ का मुतालबा करते तो घर वाले वो चीज़ बच्चों को देते और कहते कि तुम्हें ये किसने बताया तो बच्चे कहते कि हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) ने बताया है।

तो माअ़लूम हुआ कि अल्लाह तबारक व तअ़ाला अपने मख़सूस व मुर्क़रब बन्दों को ग़ैब का इ़ल्म अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह तआला के महबूबों के इ़ल्मे ग़ैब इन्कार करना गोया कुरान व तौहीद का इन्कार करना है क्योंकि रब तअ़ाला की अ़ता का इन्कार कुरान व तौहीद के मुनाफ़ी है

हुज़ूर का तमाम उम्मतों का शाहिद होने से इ़ल्मे ग़ैब का तस्दीक़

इरशादे बारी तआ़ला है :–
फिर उस दिन क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत से एक गवाह लायेंगे और (ऐ हबीब) हम आपको उन सब पर गवाह और निगेहबान बनाकर लायेंगे (सू०–निसा–4/41)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और (ये) वो दिन होगा (जब) हम हर उम्मत में उन्हीं में से उन पर एक गवाह उठायेंगे और (ऐ हबीबे मुकर्रम) हम आप को उन सब (उम्मतों और पैग़म्बरों) पर गवाह बनाकर लायेंगे। (सू०–नह्ल–16/89)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजा है जो तुम पर (अहवाल का मुशाहदा फ़रमांकर) गवाही देने वाले हैं। (सू०–मुजम्मिल–73/15)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ताकि ये रसूल तुम पर गवाह हो जायें। (सू०–हज–22/78)

मज़कूरा आयात में जो बात क़ाबिले तवज्जो है वो ये है कि किसी शैः का गवाह उसको बनाया जाता

है जिसने अपनी आँखों से उस शैः का मुशाहदा किया हो जबकि तमाम अम्बिया–किराम व उनकी उम्मतें हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) से पहले ज़मानों की हैं तो फिर हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने उन अम्बिया किराम व उनकी उम्मतों का हाल कैसे जाना तो वाज़ेह हुआ कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उस वक़्त भी बाशक्ले पैकरे नूर जलवा फ़रमां थे जब हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की तख़लीक़ भी न हुई थी और ये सब इ़ल्मे ग़ैब है।

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हर एक के दीनी रुतबे व उसके दीन की हक़ीक़त पर मुत्तलाअ़ हैं और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हर शैः से वाक़िफ़ हैं और लोगों के नेक व बुरे आअ़माल और उनके ईमान की हक़ीक़त व इख़लास और निफ़ाक़ वग़ैराह सब जानते हैं और हर नबी को उनकी उम्मत के आअ़माल पर मुत्तलाअ़ किया जाता है ताकि रोज़े क़यामत गवाही दे सकें।

रोज़े क़यामत तमाम अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) अपनी अपनी उम्मत के हर एक फ़र्द के नेक व बद के ईमान, कुफ़्र व निफ़ाक़ और तमाम अच्छे और बुरे आअ़माल की गवाही देंगे फिर उन सब पर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को गवाह बनाया जायेगा।

नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)

की गवाही तमाम उम्मतों के लिये होगी इसलिये कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) तमाम उम्मतों के अहवाल पर मुत्तलाअ़ हैं और हक़ीक़त ये है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की गवाही क़तई व हतमी है।

इस ज़िमन में मज़कूरा आयात रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब व इ़ल्मे उ़मूम व ख़ुसूस पर दलालत करती हैं कि ये आयात इस बाब में क़तअ़न नसे सरीह हैं कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) तमाम मुसलमानों हत्ता कि तमाम उम्मतों और अम्बिया के ऊपर शाहिद और गवाह हैं और किसी शैः की शहादत बग़ैर मुशाहदा के मुम्किन व क़ाबिले कुबूल नहीं जब तक कि उस शैः का मुशाहदा न किया हो और बग़ैर इ़ल्म के गवाही जाइज़ नहीं जब आप तमाम उम्मतों के गवाह हैं और तमाम मुसलमानों के गवाह हैं तो ज़रुरी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को मुसलमानों के आअ़माल व अहवाल का इ़ल्म हो।

हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे सामने मेरी उम्मत के अच्छे और बुरे आअ़माल पेश किये गये मैंने उसके अच्छे आअ़माल में रास्ते से तकलीफ़ दाह चीज़ हटाने को देखा और उसके बुरे आअ़माल में बलग़म को पाया जो मस्जिद में होता है और–

उसे दफ़न नहीं किया जाता।
(मुस्लिम–सही–1/614-ह०–1233)
(इब्ने माजा–सुनन–3/184-ह०–3683)
(इब्ने खुज़ेमा–सही–2/456-ह०–1308)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी हयात तुम्हारे लिये ख़ैर है क्योंकि बा ज़रिया–ए–वही इलाही व मेरी सुन्नत व तुम्हें नये नये अहकाम मिलते हैं और मेरी वफ़ात भी तुम्हारे लिये ख़ैर है क्योंकि (मेरी क़ब्र में भी) तुम्हारे आअ़माल मुझ पर पेश हुआ करेंगे चुनांचा अगर (तुम्हारी) नेकियाँ देखूँगा तो अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाऊँगा और बुराईयाँ देखूँगा तो तुम्हारे लिये अल्लाह तआ़ला से इस्तग़फ़ार किया करुँगा तो मैं जो नेक अ़मल देखता हूँ उस पर अल्लाह तआ़ला की हम्द करता हूँ और जो मैं बुरा अ़मल देखता हूँ तो उस पर तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार करता हूँ।
(ख़साइसुल कुबरा–2/281)
(मुस्नद–अल बज़्ज़ार–5/308-ह०–1925)
(देलमी–मुस्नद अल फ़िरदौस–1/183-ह०–686)
(अल विदाया वन निहाया–4/257)
(तफ़्सीर–तिबयानुल कुरान–7/817)

इल्मे ज़ाती और इल्मे अ़ताई की तशरीह

कुल इल्म अल्लाह तआ़ला का है और वही उसका मालिक है और मख़्लूक़ में से जिसके पास जितना भी इल्म है वो सब अल्लाह तआ़ला का अ़ताई है मसलन तमाम इ़ज़्ज़त अल्लाह तआ़ला के लिये हैं और वही उसका मालिक है जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है ''क्या ये उन (काफ़िरों) के पास इ़ज़्ज़त तलाश करते हैं तो तमाम इ़ज्जत अल्लाह तआ़ला के लिये है'' (सू०–निसा–4/139) मगर अल्लाह तआ़ला ने रसूल और मोमिनीन के लिये भी अ़ताई इ़ज़्ज़त का ज़िक्र फ़रमाया '' कि इ़ज़्ज़त अल्लाह के लिये है और उसके रसूल के लिये और मोमिनीन के लिये है (सू०–मुनाफ़िकून–63/8) ''और तू जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई तेरे ही दस्ते कुदरत में है और बेशक तू हर चीज़ पर कुदरत वाला है (सू०–आले इमरान–3/26)

तो माअ़लूम हुआ कि इल्म की तरह इ़ज़्ज़त भी अल्लाह तआ़ला की ज़ाती सिफ़त है और अल्लाह के मख़्सूस बन्दों और मोमिनीन की इ़ज़्ज़त अ़ताई है इसी तरह अल्लाह तबारक व तआ़ला की ज़ाती सिफ़त समीअ़ व बसीर है जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है ''बेशक वही खूब सुनने वाला और देखने वाला है। (सू०–बनी इसराईल–17/1) और–

मख़्लूक़ की समीअ़ व बसीर की सिफ़त अ़ताई है ''फिर हम उसको सुनने वाला और देखने वाला (इन्सान) बना देते हैं। (सू०-दह्र/इन्सान-76-12)

इसी तरह तमाम कुव्वतों का मालिक अल्लाह तआ़ला है और ये उसकी ज़ाती सिफ़त है ''सारी कुव्वतो का मालिक अल्लाह है सू०-बक़राह-2/165 और मख़्लूक़ के पास जो कुव्वत है वो अ़ताई है ''एक क़वी हैकल जिन्न ने कहा कि मैं आपके इस मक़ाम से उठने से पहले मैं वो तख़्त आपके पास ला सकता हूँ और बेशक मैं (उसके लाने) पर ताक़तवर (और) अमानत दार हूँ (सू०-नम्ल-27/39) इसी तरह रऊफ़ व रहीम अल्लाह तआला की ज़ाती सिफ़त है 'बेशक अल्लाह तआ़ला तमाम इन्सानों के साथ निहायत शफ़क़त फ़रमाने वाला बड़ा मेहरबान है (सू०-हज-22/65) और हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) भी रऊफ़ व रहीम हैं मगर ये अ़ताई सिफ़त है ''और मोमिनों के लिये (वो) निहायत शफ़ीक़ और बेहद रहम फ़रमाने वाले हैं'' (सू०-तौबा-9/128)

कुल कायनात पर अल्लाह तआ़ला की रहमत मुहीत है और अल्लाह तआ़ला ने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को तमाम जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है ''कि हमने आपको तमाम जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा है'' (सू०-अम्बिया-21/107) मगर ये रहमत अ़ताई है।

कुरान मजीद में नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के जो अस्मा मुबारक मज़कूर हैं वो अल्लाह तआ़ाला के भी अस्मा-ए-हुस्ना हैं जैसे ताहा का माअ़नी तय्यब व ताहिर और हादी है और ये अल्लाह तआ़ाला के अस्मा में से एक इस्म है इसी तरह अल्लाह तआ़ाला का इस्मे पाक रऊफुर्रहीम है मुन्दरजा ज़ैल आयत में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को भी रऊफुर्रहीम फ़रमायाः-

इरशादे बारी तआ़ाला है :-

और वो मोमिनो के लिये रऊफुर्रहीम हैं।
(सू०-तौबा-9/128)

अल्लाह तआ़ाला का नाम हक़ और मुबीन है और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को भी हक़ व मुबीन फरमायाः-

यहाँ तक कि उनके पास हक़ और वाज़ेह व रौशन बयान वाले रसूल तशरीफ़ ले आये।
(सू०-जुख़रुफ़-43/29)

और आप फ़रमा दीजिये कि बेशक (अब) मैं ही अ़ज़ाबे इलाही का वाज़ेह व सरीह डर सुनाने वाला हूँ। (सू०-हिज्र-15/89)

अल्लाह तआ़ाला का इस्मे पाक नूर है और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को-

नूर फ़रमायाः–
बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ नूर आ गया और रौशन किताब। (सू०–मायदा–5/15)

अल्लाह तबारक व तआ़ला के अस्मा मुबारक में एक नाम शहीद है और नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को भी शाहिद व शहीद फरमायाः–

बेशक हमने आपको शाहिद (हक़ और खुल्क़ का मुशाहदा करने वाला) बनाकर भेजा और खुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला बनाकर भेजा। (सू०–अहज़ाब–33/45)

और रसूलुल्लाह तुम्हारे हक़ में शहीद (गवाह) होंगे। (सू०–बक़राह–2/143)

रब तआ़ला के अस्मा मुबारक में से एक नाम करीम है इसका माअ़नी है बहुत ख़ैर फ़रमाने वाला, बहुत करम करने वाला और बहुत मुआ़फ़ फ़रमाने वाला अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को भी करीम फ़रमायाः–

बेशक ये करम वाले रसूल का (पढ़ा हुआ) कलाम है। (सू०–हाक़्क़ाह–69/40)

अल्लाह तआ़ला के अस्मा–ए–पाक में से अ़ज़ीम

भी है और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को भी अ़ज़ीम फ़रमायाः–

बेशक आप अ़ज़ीमुश्शान खुल्क़ पर क़ायम हैं। (सू०–क़लम–68/4)

अल्लाह तबारक व तआ़ाला के अस्मा में से एक नाम ख़बीर भी है यानी ख़बर रखने वाला और हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) को भी ख़बीर फ़रमायाः–

फिर रहमान अर्श पर जलवा फ़रमां हुआ (ऐ– माअ़रफ़्ते हक़ के तालिब) तू इसके बारे में किसी ख़बर रखने वाले से पूछले। (सू०–फुरक़ान–22/59)

इस आयत में ख़बीरा यानी ख़बर रखने वाले से मुराद हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की ज़ाते गिरामी है।

अल्लाह तआ़ाला के अस्मा में से अल क़वी और ज़ी कुव्वत है और हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) को भी रब तआ़ाला ने ज़ी कुव्वत फ़रमायाः–

जो (कि) कुव्वत व हिम्मत वाले हैं (और) मालिके अ़र्श के हुजूर बहुत बड़ी क़दरो मन्ज़िलत वाले हैं (सू०–तकवीर–81/19-20)

अल्लाह तआ़ाला का इस्मे पाक वली है और रब तआ़ाला ने अपने हबीब को भी वली फ़रमायाः– कि तुम्हारा वली अल्लाह और उसका रसूल है।

जो अस्मा–ए–पाक अल्लाह तआला के हैं वो हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के भी हैं और ज़ाहिरी तौर पर उनमें इश्तिराक है मगर माअ़नी के एतबार से उनमें फ़र्क़ है मसलन रहीम अल्लाह तआ़ला का इस्मे पाक है और हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का भी इस्मे पाक रहीम है लेकिन अल्लाह तआ़ला अज़ खुद रहीम है और हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) रब तआ़ला के बनाये हुये रहीम हैं और रब तआ़ला अज़ली व अबदी रहीम है और हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ग़ैर अज़ली व ग़ैर अबदी रहीम हैं और रब तआ़ला की रहमत के आसार ग़ैर मुतनाही हैं यानी जिसकी कोई इन्तिहां न हो और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के आसार मुतनाही हैं।

तो मज़कूरा दलाइल से ये वाज़ेह हुआ कि जिस इ़ल्म में इहाता इ़ल्म की सिफ़त पायी जाये उसे इल्म मुहीत कहते हैं और ये अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ास है और जो इ़ल्म अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाने से मख़लूक़ में आ जाये वो इ़ल्मे मुहात है और अल्लाह तआ़ला मुहात के दरजे में जिसे जितना चाहता है उसे उतना इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाता है यानी अल्लाह तआला का इ़ल्म ज़ाती है और मख़लूक़ का इ़ल्म अ़ताई है और इनमें बाहम कोई निस्बत नहीं है मगर वो अपने मख़्सूस अम्बिया, औलिया, उ़ल्मा और जिसे जितना चाहे उसे उतना ग़ैब का इ़ल्म अ़ता फ़रमाता है।

अ़क़ीदा इ़ल्मे ग़ैब अहादीस की रौशनी में

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) को ज़मीनो आसमान की हर शैः दिखाई गई

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये ज़मीन को समेट दिया तो मैंने उसको शर्क़ ता ग़र्क सब तरफ़ से देख लिया।
(मुस्लिम–सही–6/413-ह०–7258)
(अबू दाऊद–सुनन–4/265-ह०–4252)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/71-ह०–2176)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सारी दुनियाँ मेरे सामने कर दी लिहाज़ा मैं सारी दुनियाँ को और जो कुछ भी दुनियाँ में क़यामत तक होने वाला है मैं उसको और उसमें ता क़यामत होने वाले अहवाल और वाक़आ़त को सब का सब ऐसे देख रहा हूँ जैसे इस हाथ की हथेली को देख रहा हूँ।
(कंजुल ऊ़म्माल–6/203-ह०–31971)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–6/101)

➡ हज़रत असमा बिन्ते हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने सूरज ग्रहन के मौक़े पर बाद नमाज़ फ़रमाया कि हर वो शैः जो मुझे पहले दिखाई गई थी वो मैंने इस जगह खड़े देख ली और कोई चीज़ ऐसी न रही जिसे मैंने अपनी नमाज़ में न देखा हो हत्ता कि जन्नत व दोज़ख़ भी चुनांचा जन्नत मेरे बिल्कुल क़रीब कर दी गई कि मैंने अपना हाथ बढ़ाया ताकि कुछ फल तोड़ लूँ कि तुम्हें दिखाऊँ फिर मैंने ख़्याल किया कि ऐसा न करूँ ग़रज़ ये कि जिन चीज़ों का तुमसे वाअ़दा किया गया है उन में से कोई भी चीज़ ऐसी न रही जिसे मैंने अपनी नमाज़ में न देखा हो।
(मुस्लिम–सही–2/368-ह०–2102)
(बुख़ारी–सही–1/134-ह०–86)
(नसाई–सुनन–1/490-ह०–1485)

➡हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने एक रोज़ हमारे पास आने में देर कर दी और क़रीब था कि हम सूरज की किरन देख लेते कि आप जल्दी से निकले और फिर नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हल्की नमाज़ पढ़ाई और सलाम फेरने के बाद फ़रमाया तुम जैसे हो उसी तरह अपनी अपनी सफ़ों में ठहरे रहो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि–

वसल्लम) हमारी तरफ़ मुतव्वजै हुये और फ़रमाया कि मैं तुमको बताता हूँ कि मुझको किसने तुमसे सुबह के वक़्त रोके रखा कि मैं रात के वक़्त उठा और वुजू किया और फिर मेरे मुक़द्दर में जितनी नमाज़ थी मैंने अदा की फिर मेरे ऊपर नींद का ग़लबा हुआ और फिर मैंने अपने रब को हसीन व जमील सूरत मे देखा रब तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मैंने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मैं हाज़िर हूँ अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मुक़र्रब फ़रिश्ते किस चीज़ में बहस कर रहे हैं मैंने तीन बार कहा ऐ मेरे रब मैं नहीं जानता फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने अपने रब को देखा कि उसने अपनी हथेली मेरे कन्धों के दरमियान रखी और मैंने उसकी ठन्डक अपने सीने में महसूस की फिर हर चीज़ मुझ पर मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) हो गई और मैंने सब कुछ जान लिया। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/791-ह०–3235) (अबू याअ़ला–अल मुस्नद–2/514-ह०–2601)

➡हजरत उ़क़बा बिन आ़मिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) एक दिन बाहर तशरीफ़ लाये और शुहदा–ए–उहद पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जिस तरह (आ़म) मुर्दों पर पढ़ी जाती है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) मिम्बर पर जलवा अफरोज़ हुये और खुत्बा इरशाद फ़रमाया बेशक मैं तुम्हारा पेशरौ और तुम पर गवाह हूँ–

और बेशक रब तआ़ला की क़सम मैं अपने हौज़े कौसर को इस वक़्त भी देख रहा हूँ और बेशक मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की कुँजियाँ अ़ता की गई हैं और खुदा की क़सम मुझे ये डर नहीं कि तुम मेरे बाद शिर्क करने लगोगे बल्कि मुझे इस बात का डर है कि तुम दुनियाँ की मुहब्बत में मुब्तिला हो जाओगे।

(बुख़ारी–सही–2/110-ह०–1344)
(मुस्लिम–सही–4/446-ह०–5976)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/284-ह०–3198)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) को इब्तिदाए ख़ल्क़ से क़्यामत तक के अहवाल व हर शैः का इ़ल्म अ़ता हुआ

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मिम्बर पर खड़े हुये और अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना के बाद फ़रमाया कि मुझसे जो कोई भी जो कुछ पूछना चाहे तो वो पूछे रब तआ़ला की क़सम जब तक मैं यहाँ खड़ा हूँ तुम जो भी पूछोगे मैं उसका जवाब दूँगा फिर आपने फ़रमाया उन लोगों का क्या हाल है जो मेरे इ़ल्म में ताअ़न (एतराज़) करते हैं पस आज से लेकर क़्यामत तक जो कुछ होने वाला है उसमें से कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसका तुम मुझसे सवाल करो और मैं तुम्हें उसकी ख़बर न दे दूँ पस हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा (रज़िअल्लाहु–

तआ़ला अन्हु) ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया कि या-रसूलल्लाह मेरा बाप कौन है तो आपने इरशाद फ़रमाया तेरा बाप हुज़ाफ़ा है फिर एक दूसरा शख़्स खड़ा हुआ और कहने लगा या रसूलल्लाह मेरा ठिकाना कहाँ है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तेरा ठिकाना दोज़ख़ है फिर एक तीसरे शख़्स ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे वालिद कौन हैं तो आप (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि तेरे वालिद शैबा के आज़ाद कर्दा गुलाम सालिम हैं।

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जलाल के सबब बार बार ये ऐअ़लान फ़रमाते थे कि मुझसे जो चाहे पूछ लो और मुझसे सवाल करो हत्ता कि लोंगों ने ज़ारो क़तार रोना शुरु कर दिया चुनांचा हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) घुटनों के बल बैठकर अ़र्ज़ गुज़ार हुये कि हम अल्लाह के रब होने पर व इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के रसूल होने पर राज़ी हैं (और हमें कुछ नहीं पूछना) रावी कहते हैं हज़रत उ़मर (रजिअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की गुज़ारिश पर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ख़ामोश हो गये फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की कि जिस के क़ब्जे कुदरत में मेरी जान है कि अभी अभी इस

दीवार के सामने मुझ पर जन्नत और दोज़ख़ पेश की गई जबकि मैं नमाज़ पढ़ रहा था और मैंने जन्नत की तरह बेहतर और दोज़ख़ की तरह बद तर कोई चीज़ नहीं देखी फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मिम्बर से उतर आये।
(बुख़ारी–सही–1/380-ह०–540)
(बुख़ारी–सही–6/393-ह०–7089)
(बुख़ारी–सही–6/497-ह०–7291)
(मुस्लिम–सही–6/53-ह०–6121)
(मुस्नद अहमद–5/325-ह०–12067)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–6/286-ह०–3201)
(तबरानी मुअ़जम औसत–9/72-ह०–9155)
(इब्ने हिब्बान सही–7/434-ह०–6429)

➡ हज़रत ड़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है आप फ़रमाते हैं एक रोज़ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हमारे दरमियान क्याम फ़रमाँ हुये और फिर हमें इब्तिदा–ए–ख़ल्क़ से लेकर रोज़े क्यामत तक और अहले जन्नत के जन्नत में दाख़िल हो जाने और अहले दोज़ख़ के दोज़ख़ में दाख़िल हो जाने तक सब कुछ बता दिया यानी इब्तिदा–ए–ख़ल्क़ से लेकर रोज़े क्यामत तक की पूरी तफ़्सील बयान फ़रमाई पस इस बयान को जिसने जिस क्दर याद रखा सो उसने उसे याद रखा और जिसने जो कुछ भुला दिया सो उसने भुला दिया।
(बुख़ारी–सही–3/443-ह०–3192)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हमारे सामने खड़े हुये और आपने अपने खड़े होने के उस वक़्त से लेकर क़यामत तक वाक़ैअ़ होने वाली तमाम बातें बयान फ़रमायीं जिसने उस बयान को याद रखा उसने उसे याद रखा और जिसने उसे भुला दिया उसने उसे भुला दिया वो बयान मेरे साथियों के इ़ल्म में आया फिर उनमें से जब कोई चीज़ पेश आती जो मैं भूल चुका होता हूँ वो मुझे याद आ जाती है बिल्कुल इसी तरह जैसे इन्सान किसी ग़ायब हो जाने वाले शख़्स का चेहरा याद रखता है जब उसे देखता है तो पहचान लेता है।
(मुस्लिम–सही–6/415-ह०–7263)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/90-ह०–2191)
(अबू दाऊद–सुनन–5/255-ह०–4240)

➡ हज़रत अबू ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हमें नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई फिर मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुये और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हमें ख़िताब फ़रमाया हत्ता कि जुहर का वक़्त आ गया फिर आप मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाये और नमाज़ अदा फ़रमाई फिर मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुये और हमें ख़िताब फ़रमाया हत्ता कि अ़स्र की नमाज़ का वक़्त हो गया और फिर आप मिम्बर से उतरे और हमें नमाज़े अ़स्र पढ़ाई और

फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और फिर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया हत्ता कि सूरज गुरुब हो गया पस आपने हमें जो कुछ हो चुका और जो कुछ होने वाला है सब के बारे में आगाह फ़रमा दिया। (मुस्लिम–सही–5/397-ह०–7267)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आज रात इस हुजरे में मुझ पर मेरी उम्मत पेश की गई हत्ता कि उनमें से हर एक आदमी को मैं इस तरह पहचानता हूँ जिस तरह तुम में से कोई अपने साथियों को पहचानता है फिर एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये तो वो लोग हैं जो पैदा किये गये हैं क्या आपने वो भी देखे हैं जो अभी पैदा नहीं किये गये तो आपने फ़रमाया हाँ मेरे सामने उनकी भी सूरतें पेश की गईं और उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है मैं उनमें से हर एक शख़्स को इस तरह पहचानता हूँ जिस तरह से तुम में से कोई अपने साथी को पहचानता है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/513-ह०–2985)

अह्ले जन्नत व अह्ले दोज़ख़ का इ़ल्म

➡ हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के हाथ मुबारक में दो किताबें–

थीं फिर फ़रमाया क्या तुम इन किताबों के बारे में जानते हो तो हमने अ़र्ज़ किया या–रसूलल्लाह हम इसके बारे में नहीं जानते और आप हमें खबर दें सो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ये किताब (जो आपके दाहने हाथ में थी) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और इसमें तमाम जन्नत वालों के नाम हैं और उनके बाप दादाओं और उनके क़बीलों के नाम है और ये नाम न इससे बढ़ेगे और न घटेंगे और फिर फ़रमाया ये किताब (जो आपके बाँये हाथ में थी) ये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और इसमें तमाम दोज़ख वालों के नाम हैं और उनके बाप दादाओं के और उनके कबीलों के नाम हैं और ये नाम न इससे बढ़ेंगे और न घटेंगे। (तिर्मिज़ी–2/47-ह०–2141)

➡ अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने दस लागों के जन्नती होने की बशारत (खुशख़बरी) दी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बक्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में हैं और उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में हैं और उ़स्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में हैं व मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में और तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में और जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में हैं और साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला–अ़न्हु) जन्नत में हैं और अबू उ़बैदा (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में हैं और सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में हैं और अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ौफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जन्नत में हैं (अबू दाऊद–सुनन–6/533-ह०–4649)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1089-ह०–3747)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–7/483-ह०–7222)

➡ उम्मुल मोमिनीन हजरत हफ़्सा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुझे उम्मीद है कि जो लोग बदर की लड़ाई और हुदैविया की सुलह में हाज़िर थे इंशा अल्लाह उनमें से कोई दोज़ख़ में न जायेगा फिर मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह तआ़ला तो फ़रमाता है तुम में से कोई ऐसा नहीं जो जहन्नुम पर वारिद न हो तो आपने फ़रमाया इसके बाद तुमने नहीं पढ़ा कि ‘‘हम निजात देंगे परहेज़गारों को और ज़ालिमों को उसमें धुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे। (सू०–मरयम–19/71,72)
(इब्ने माजा–सुनन–3/397-ह०–4281)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुझे उ़म्मीद है कि जन्नत वालों में निस्फ़ तुम लोग होगे (यानी जन्नतियों की आधी ताअ़दाद सिर्फ़ मुसलमानों की होगी) और निस्फ़ में बाक़ी और सब उम्मतें होंगी और इसकी वजह ये है कि जन्नत में वही रुहें जायेंगी जो मुसलमान हैं (इब्ने माजा–3/397-4283)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझसे वाअदा फ़रमाया है कि वो मेरी उम्मत से सत्तर हज़ार आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा जिनका न हिसाब होगा और न उन पर अ़ज़ाब होगा और हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार मजीद होंगे और इनके अलावा तीन मुटठियाँ मेरे रब की मुट्ठियों में से बग़ैर हिसाब व बग़ैर अ़ज़ाब जन्नत में जायेंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/399-ह०–4286)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/258-ह०–2437)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जन्नत वालों की एक सौ बीस सफ़ें होगी उनमें से 80 सफ़ें मेरी उम्मत के लोगों की होंगीं और चालीस सफें और उम्मतों में से होंगीं ।
(इब्ने माजा–सुनन–3/399-ह०–4289)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/335-ह०–2546)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत आख़िरी उम्मत है मगर सब से पहले मेरी उम्मत का हिसाब होगा निदा आयेगी उम्मी उम्मत कहाँ है और उसके नबी (सल्लल्लाहु

तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) कहाँ है तो हम सबसे आख़िर (दुनियाँ में) और सबसे अव्वल जन्नत में होंगे। (इब्ने माजा–3/399-ह०–4290)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैं मदीना तय्यबा के एक बाग़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के हमराह था कि अचानक एक शख़्स आया और उसने दरवाज़ा खोलने का मुतालबा किया तो हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दरवाज़ा खोल दो और आने वाले को जन्नत की बशारत (खुशख़बरी) दो तो मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वो अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु हैं मैंने उन्हें खुशख़बरी दी जो रसूलुल्लाह ने फ़रमाई थी उन्होंने उस पर अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा किया फिर एक और शख़्स आया और उसने भी दर'वाज़ा खोलने का मुतालबा किया तो हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दर'वाज़ा खोल दो और उसे जन्नत की बशारत सुनाओ तो मैंने दरवाज़ा खोला तो वो हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) थे पस मैंने उन्हें खुश ख़बरी सुनाई जो हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाई थी उन्होंने भी इस पर अल्लाह तअ़ाला की हम्दो सना की

फिर इसके बाअ़द एक और शख़्स आया और उसने दरवाज़ा खालने का मुतालबा किया तो

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझे फ़रमाया दरवाज़ा खोल दो और आने वाले को जन्नत की खुशख़बरी दो और उस मुसीबत पर जो उसे पहुँचेगी मैंने दर'वाज़ा खोला तो देखा वो हज़रत उ़स्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) हैं मैंने उन्हें नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इरशाद से मुत्तलाअ़ किया तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना की और मज़ीद फ़रमाया कि अल्लाह ही मददगार है।
(बुख़ारी–सही–3/726-ह०–3693)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1068-ह०–3710)
(तबरानी–मुअ़जम औसत-5/518-ह०–7288)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रजिअल्लाहु तआ़ला अन्हु) फ़रमाते हैं कि हमने ख़ैबर फ्तह किया तो हमें माले ग़नीमत में सोना चाँदी नहीं मिला था बल्कि गाय, ऊँट, सामान और बाग़ात मिले थे फिर हम नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के हमराह वादी अलकुरा में आये और आपके साथ एक मिदअ़म नामी गुलाम था जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के ऊँट का कजावा उतार रहा था कि अचानक किसी ना माअ़लूम सिम्त से एक तीर आकर उसे लगा (और वो गुलाम तीर लगने से मर गया) तो लोगों ने कहा उसे शहादत मुबारक हो पस नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐसा हरगिज़ नहीं उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है बल्कि उसने

जो चादर ख़ैबर के रोज़ तक़सीमे ग़नीमत से पहले चुराई थी वो उस पर आग का शुअ़ला बनकर भड़क रही है हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ये बात सुनकर एक शख़्स एक या दो तस्मे लेकर हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ की मैंने भी ये उठा लिये थे ये बात सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाया कि एक या दो तस्मे भी जहन्नुम की आग बनते हैं।
(बुख़ारी–सही–4/327-ह०–4234)
(मुस्लिम–सही–1/215-ह०–310)
(अबू दाऊद–सुनन–3/195-ह०–2711)

➡ हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि ख़ैबर के रोज़ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के असहाब में से एक शख़्स वफ़ात पा गया लोगों ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को उसकी वफ़ात की ख़बर दी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम लोग अपने उस साथी का जनाज़ा पढ़ लो इस पर लोगों के चेहरे फ़क़ हो गये फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे साथी ने अल्लाह की राह में होते हुये ख़यानत (या चोरी) की है फिर हमने उसके सामान की तालाशी ली तो हमें उसमें से ऐसे मूँगे मिले जो यहूदी लोग इस्तेअ़माल किया करते थे उनकी क़ीमत दो दिरहम भी न थी
(अबू दाऊद–सुनन–3/195-2710)

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ख़ैबर के मक़ाम पर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) और मुश्रिकीन में खूब लड़ाई हुई फिर जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अपने लश्कर की जानिब वापस आ गये और मुश्रिकीन अपने लश्कर की तरफ़ लौट गये इस दौरान में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के असहाब में से एक शख़्स ऐसा था जो जमाअ़त से अलग हो जाने वाले या तन्हा रह जाने वाले मुशरिक को नहीं छोड़ता था वो उसका पीछा करता था और अपनी तलवार से उसे मौत के घाट उतार देता था उस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ चर्चा होने लगा कि वो खूब लड़ा और जितना काम उसने किया है उतना काम हममें से किसी ने भी नहीं किया है लेकिन नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह व आलिहि वसल्लम) ने उसके मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि तुम आगाह रहो कि वो शख़्स दोज़ख़ी है

तो एक शख़्स ने कहा कि मैं उसके साथ रहता हूँ चुनांचा वो शख़्स उसके साथ रहा तो उसने देखा जब वो शख़्स जख़्मों से निढ़ाल हो गया तो उसने जल्दी मरना चाहा इसलिये उसने अपनी तलवार ज़मीन पर रखी और उसकी तेज़ नौक अपनी सीने पर रखी फिर अपनी तलवार पर ज़ोर दिया इस तरह उसने खुदकुशी कर ली फिर एक दूसरा शख़्स हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और

अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं इस बात पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया क्या बात है तो उस शख़्स ने कहा जिस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ आपने फ़रमाया था कि वो दोज़ख़ी है और लोगों को ये बात बड़ी गिरां गुज़री थी चुनाँचा मैं उसकी तलाश में निकला तो देखा कि वो सख़्त ज़ख़्मी हो गया था और वो शख़्स ज़ख़्मों से निढ़ाल हो गया तो उसने जल्दी मरना चाहा इसलिये उसने अपनी तलवार ज़मीन पर रखी और उसकी नोक अपने सीने पर रखी फिर उसने अपनी तलवार पर ज़ोर दिया और इस तरह से उसने खुदकुशी कर ली फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी बाज़ाहिर लोगों के सामने अह्ले जन्नत वाले काम करता है हालाँकि वो जहन्नुमी होता है और इसी तरह कोई आदमी बाज़ाहिर लोगों के सामने अह्ले जहन्नुम वाले काम करता है लेकिन वो जन्नती होता है। (बुख़ारी–सही–4/314-ह०–4203)
(बुख़ारी–सही–6/130-ह०–6607)
(मुस्लिम–सही–1/206-ह०–306)

➡ हज़रत अनस (रजिअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हज़रत हारिसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जंगे बदर में शहीद हो गये जबकि वो उस वक़्त नौ उमर थे उनकी वालिदा ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल–

आपको माअ़लूम है कि मुझे हारिसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से कितनी मुहब्बत थी और अगर वो जन्नत में हैं तो मैं सब्र करती हूँ और इस सब्र पर सवाब की उम्मीदवार हूँ और अगर कोई दूसरी बात है तो आप देखेंगे कि मैं क्या करती हूँ फिर हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अफ़सोस क्या तुम पागल हो गई हो क्या जन्नत एक ही है वहाँ तो बहुत सी जन्नतें हैं और वो जन्नुतल फ़िरदौस में हैं।
(बुख़ारी–सही–6/106-ह०–6550)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जहन्नुम मेरे सामने लाई गयी तो मैंने उसमें अ़म्र बिन लुहै बिन क़म्आ़ बिन ख़िन्दिफ़ को देखा उसे जहन्नुम में घसीटा जा रहा था वो पहला शख़्स था जिसने हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की शरीअ़त में तहरीफ़ की और बुत रखे।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–11/14-ह०–36890)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) को लोगों के जुमला अहवाल का इ़ल्म है

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अपनी बीवी हज़रत उम्मे सुलेम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से कहा कि मैंने नबी

करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की आवाज़ में नक़ाहत (कमज़ोरी) महसूस की जिससे मुझे ये अन्दाज़ा हुआ कि आपको भूक लगी है तो क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है जो खाने के लिये हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को पेश करूँ उस ख़ातून ने जवाब दिया कि हाँ फिर उस ख़ातून ने जौ की चन्द रोटियाँ निकाली और उन्होंने अपना दुपट्टा लिया और रोटियाँ उसके कुछ हिस्से में लपेट दी फिर मुझे रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में भेजा हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैं वो रोटियाँ लेकर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के साथ कुछ लोग भी थे मैं उन लोगों के पास आकर खड़ा हो गया कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने दरयाफ़्त किया क्या तुम्हें अबू तल्हा ने भेजा है मैंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या खाना देकर भेजा है तो मैंने कहा जी हाँ।

(बुख़ारी–सही–3/662-ह०–3578)
(मुस्लिम–सही–5/260-ह०–5316)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1026-ह०–3630)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/539-ह०–6534)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कुरैश मेरे सफ़रे मेअ़राज के मुताअ़ल्लिक़ मुझसे सवाल कर रहे थे और उन्होंने बैतुल मुक़द्दस की ऐसी चीज़ों के बारे में सवालात किये जिन्हें (ग़ैर ज़रुरी होने की वजह से) मैंने याद न रखा तो मैं हतीम मे खड़ा हो गया और रब तआ़ला ने बैतुल मुक़द्दस को मेरी ख़ातिर उठा लिया यानी अल्लाह तआ़ला ने मुझ पर बैतुल मुक़द्दस को ज़ाहिर फ़रमां दिया और मैं उसे देखने लगा लिहाज़ा कुरैश मुझसे जिस चीज़ के बारे में पूछते गये मैं उन्हें बताता गया। (मुस्लिम–सही–1/285-ह०–430)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/705-ह०–3133)
(बुख़ारी–सही–4/117-ह०–3886)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने बयान करते हैं एक मर्तबा रसूले अकरम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हमें नमाज़े जुहर पढ़ाई कि आख़िरी सफ़ों में एक शख़्स था जिसने अपनी नमाज़ ख़राब कर दी तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने सलाम फेरा तो उसे पुकारा ऐ फुलां क्या तू अल्लाह से नहीं डरता क्या तू नहीं देखता कि तू किस तरह नमाज़ पढ़ रहा था और क्या तुम ये समझते हो कि जो कुछ तुम करते हो उसमें से मुझ पर कुछ पोशीदा रह जाता है रब तआ़ला की क़सम मैं अपनी पुश्त के पीछे से भी उसी तरह देखता हूँ जिस तरह सामने से देखता हूँ।
(इब्ने खुज़ैमा–सही–1/610-ह०–664)

➡हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा एक शख़्स को इस बात पर बहुत सा माल दिया गया कि वो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को शहीद कर दे अल्लाह तआ़ाला ने आपको इस बात पर मुत्तलाअ़ फ़रमा दिया तो उसको सूली पर चढ़ाने का हुक्म दिया गया और इस्लाम में सबसे पहले इसी शख़्स को सूली चढ़ाया गया।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–11/19-ह०–36916)

हज़रत उ़मर और ख़बरे ग़ैब

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने एक लश्कर भेजा और उन पर एक शख़्स को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया था जिनको हज़रत सारिया कहा जाता है उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) खुत्बा–ए–जुमअ़ा इरशाद फ़रमा रहे थे कि यकायक आपने दरमियान में खुत्बा छोड़कर तीन बार फ़रमाया कि ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ जाओ और इस तरह हज़रत सारिया (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) को पहाड़ की तरफ़ जाने का हुक्म दिया उसके बाद फिर से खुत्बा शुरु किया हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु ने बाद नमाज़ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से दरयाफ़्त किया कि आप खुत्बा इरशाद फ़रमां रहे थे फिर यकायक बुलन्द आवाज़ से कहने लगे ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ जाओ ये

क्या मुआ़मला था तो हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि क़सम है खुदा की मैं ऐसा कहने पर मजबूर हो गया था कि मैंने मुसलमानों को देखा कि वो पहाड़ के पास लड़ हैं और कुफ़्फ़ार उनको आगे से और पीछे से घेरे हुये हैं ये देखकर मुझसे ज़ब्त न हो सका और मैंने कह दिया ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ जाओ इस वाक़ेअ़े के कुछ रोज़ के बाद हज़रत सारिया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का एक क़ासिद एक ख़त लेकर आया कि हम लोग जुमाअ़ के दिन कुफ़्फ़ारों से लड़ रहे थे और क़रीब था कि हम शिकस्त खा जाते मगर ऐ़न जुमाअ़ की नमाज़ के वक़्त हमने किसी की आवाज़ सुनी कि ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ जाओ उस आवाज़ को सुनकर हम पहाड़ की तरफ़ चले गये तो अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को शिकस्त दी और हमने उन्हें क़त्ल कर डाला और इस तरह हमको फ़तह हासिल हुई (मिश्कात–3/203–ह०–5700)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/219-ह०–355)

सय्यदा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की वफ़ात की ख़बरे ग़ैब

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब सूरह–नस्र "इज़ा जाआ नसरुल्लहि" नाज़िल हुई तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत फ़ातिमा को बुलाया और उनसे फ़रमाया कि मुझे

मेरी वफ़ात की ख़बर दी गई तो वह रोने लगीं तो हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम न रोओ इसलिये कि मेरे घर वालों में सबसे पहले तुम मुझसे मिलोगी तो वो हंस पड़ी। (अबू दाऊद–सुनन–6/880-ह०–5217) (मिश्कात)

आसमानों के फ़रिश्तों का इ़ल्म

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं जानता हूँ कि दोज़ख़ के फ़रिश्ते कितने हैं और अ़र्श उठाने वाले फ़रिश्ते कितने हैं और मेरी उम्मत से मेरी वजह से दर गुज़र किया गया और माफ़ी दे दी गई पस इरशादात सुनो और इताअ़त करो और अल्लाह तआ़ला की किताब को अपने ऊपर लाज़िम कर लो और उसके हलाल किये को हलाल जानो व उसके हराम किये को हराम जानो (अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–3/540-ह०-6606)

ख़जूरों के चोर जिन्न की ख़बरे ग़ैब

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि भूत व जिन्न आकर मेरी ख़जूरे चुरा लिया करते थे इसलिये मेंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से शिकायत की तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जाओ और जब उसको देखो तो–

कहो कि रसूलुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हो सो हज़रत अबू अय्यूब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उसे पकड़ लिया ताकि उसको हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास ले जायें सो उसने क़सम खाई कि अब फिर कभी न आऊँगा तो उन्होंने उसको छोड़ दिया फिर आप हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की ख़िदमत में हाज़िर हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा कि क्या किया तुम्हारे क़ैदी ने उन्होंने अ़र्ज किया कि उसने क़सम खाई कि अब वो दोबारा न आयेगा सो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उसने झूठ कहा और वो दोबारा फिर आयेगा और वो दोबारा फिर आया

तो हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फिर उसे पकड़ लिया सो उसने फिर क़सम खाई कि अब वो दोबारा न आयेगा सो उन्होंने उसे छोड़ दिया और फिर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में आये तो आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा क्या किया तुम्हारे क़ैदी ने आपने अ़र्ज़ किया कि उसने क़सम खाई कि अब मैं दोबारा कभी न आऊँगा सो मैंने उसे छोड़ दिया आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो झूठा है और वो फिर आयेगा और वो फिर आया सो हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फिर उसे पकड़ लिया और कहा कि मैं तुझे अब हरगिज़ छोड़ने वाला नहीं हूँ हत्ता कि-

मैं तुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम की बारगाह तक ले जाऊँगा सो उसने कहा कि मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ यानी आयतल कुर्सी कि घर में पढ़ने से शैतान बग़ैराह तुम्हारे पास न आयेंगे फिर वो हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा कि तुम्हारे क़ैदी का क्या बना तो उन्होंने सारी बात अ़र्ज़ कर दी तो फिर हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये उसने सच कहा अगरचा वो झूठा है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/543-ह०–2880)

➡ हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते कि ख़ैबर के रोज़ एक सहाबी की वफ़ात हो गई तो लोगों ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ख़बर दी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोग अपने साथी का जनाज़ा पढ़ लो इससे लोगों के चेहरे फ़क़ हो गये फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हारे इस साथी ने राहे ख़ुदा में होते हुये ख़यानत (या चोरी) की है तो हमने उसके सामान की तलाशी ली तो हमें उसमें ऐसे मूँगे मिले जो यहूदी लोग इस्तेअ़माल करते थे (शायद उनकी औरतें इस्तेअ़माल करती हों) और उनकी क़ीमत दो दिरहम भी न थी।
(अबू दाऊद–सुनन–3/195-ह०–2710)

हज़रत मौला अ़ली के हाथ पर खै़बर फ़तह होने की ख़बरे ग़ैब

➡ हज़रत सलमा बिन अक्वाअ़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) गज़वा खै़बर में हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से पीछे रह गये थे क्योंकि उनकी आँखों में दर्द था फिर वो फ़रमाने लगे मैं हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से क्यों कर पीछे रहूँ चुनांचा वो निकल पड़े और नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से आ मिले उस रात की शाम जिसकी सुबह खै़बर फ़तह हुआ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कल मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जिस शख़्स से अल्लाह तअ़ाला और उसका रसूल मुहब्बत करते हैं और वो शख़्स भी अल्लाह व उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह तबारक व तअ़ाला उस शख़्स के हाथ पर फ़तह फ़रमायेगा तो फिर हमने देखा कि हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) आ गये जबकि हमें उनके आने की उम्मीद न थी फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उन्हें झण्डा दिया और फिर उनके हाथों पर अल्लाह तअ़ाला ने फ़तह नसीब फ़रमाई।

(बुख़ारी–सही–3/307-ह०–2975)
(बुख़ारी–सही–4/318-ह०–4209)

ऊँटनी सवार औ़रत की ख़बरे ग़ैब

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझे हज़रत जुबैर और मिक्दाद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को एक मुहिम पर र'वाना किया और फ़रमाया कि तुम चलते रहो यहाँ तक कि रोज़ा-ए-ख़ाख़ पहुँच जाओ (मदीना मुनव्वरा से बारह मील के फ़ासले पर ये एक जगह नाम है) वहाँ तुम्हें एक ऊँट पर सवार एक औ़रत मिलेगी उसके पास एक ख़त है वो उससे ले आओ फिर हम वहाँ से र'वाना हुये और हमारे घोड़े हमें लिये हुए तेज़ी से दौड़े रहे थे यहाँ तक कि हम रोज़ा-ए-ख़ाख़ पहुँच गये तो क्या देखते हैं कि वहाँ ऊँट पर सवार एक औ़रत है हमने उससे कहा ख़त निकाल वरना हम तेरे कपड़े उतार देंगे चुनांचा उसने सर के जूड़े में से ख़त निकाला हम वो ख़त लेकर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने वो ख़त खोलकर पढ़ा तो उसमें ये मज़मून था कि ये ख़त हातिब बिन अबू बल्तआ़ की तरफ़ से चन्द मुश्रिकीन के नाम है वो उन्हें रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के बाअ़ज़ हालात की ख़बर दे रहे हैं।

हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा ऐ हातिब ये ख़त कैसा है तो उन्होंने अ़र्ज़

किया ऐ अल्लाह के रसूल मुझे सज़ा देने में जल्दी न करें बल्कि मेरा उ़ज़्र सुन लें कि मेरा कुरैश से कोई रिश्ता नहीं है इसलिये मैंने सोचा कि मैं उन पर कोई ऐसा एहसान करूँ जिसकी वजह से वो मेरे क़राबत दारों की हिफ़ाज़त करें और मैंने ये काम कुफ़्र की बिना पर नहीं किया है और न ही मैं दीन इस्लाम से फिरा हूँ और न मैं इस्लाम के बाद कुफ़्र पर राज़ी होऊँगा ये सुनकर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इसने सच कहा है हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि चूँकि ये शख़्स गज़वा-ए-बदर में हाज़िर था और क्या तुम्हें माअ़लूम नहीं कि अल्लाह तआ़ाला ने अहले बदर को देखकर फ़रमाया कि तुम जो चाहो सो अ़मल करो यक़ीनन मैं तुम्हें बख़्श चुका हूँ।
(बुख़ारी-सही-3/321-ह०-3007)
(अबू दाऊद-सुनन-3/149-ह०-2650)

किस्रा व क़ैसर के हलाक होने की ख़बरे ग़ैब

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब किस्रा हलाक होगा तो उसके बाद कोई किस्रा न होगा और जब क़ैसर हलाक होगा तो उसके बाद कोई क़ैसर न-

होगा और मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की जान है तुम लोग दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे।
(बुख़ारी–सही–3/685-ह०–3618)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किस्रा (ईरान का बादशाह) हलाक हो जायेगा फिर उसके बाद फिर कोई किस्रा न होगा और जब कै़सर (रोम का बादशाह) हलाक हो जायेगा तो उसके बाद कोई कै़सर न होगा और क़सम उस ज़ात कि जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है ये दोनों मुल्क मुसलमान फ़तह करेंगे और तुम इन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे।
(मुस्लिम–सही–5/423-ह०–7329)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़नक़रीब तुम्हारे लिये अ़जम के इलाक़े फ़तह होगें और तुम वहाँ ऐसे घरों को पाओगे जिन्हें हम्मामात (यानी इज्तिमाई व अ़वामी गुस्ल खाना, हम्माम) कहा जाता होगा तो तुममें से कोई भी उनमें हरगिज़ न जाये इल्ला (मगर) ये कि चादरें बाँधकर।
(अबू दाऊद–सुनन–5/123-ह०–4011)

सहाबा के शहीद होने से पहले उनकी शहादत की ख़बर देना

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत जाअ़फ़र और हज़रत ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) के शहीद होने से पहले उनके शहीद होने की ख़बर दी और उस वक़्त हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की आँखों से आँसू जारी थे।
(बुख़ारी–सही–3/690-ह०–3630)

➡ हज़रत जाबिर बिन समुरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से फ़रमाया कि तू ख़लीफ़ा होगा और तुझे शहीद किया जायेगा और तुम्हारी दाढ़ी खून से रंगी जायेगी।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/534-ह०–7318)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) जबले उहद पर तशरीफ़ ले गये हज़रत अबू बक्र, हज़रत उ़मर व हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) भी आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के हमराह थे कि पहाड़ हरकत करने लगा यानी हिलने व कांपने लगा तो

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने पाँव मुबारक से उस पर ज़र्ब लगाई और फ़रमाया ऐ उहद ठहर जा तेरे ऊपर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।
(बुख़ारी–सही–3/722-ह०–3686)
(अबू दाऊद–सुनन–6/536-ह०–4651)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1061-ह०–3697)

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब में ये बात थी कि हज़रत ऊ़मर और हज़रत ऊ़स्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) शहीद होंगे सो आप (अ़लैहिस्सलाम) ने उनकी शहादत की ख़बर दी।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हिरा पहाड़ पर तशरीफ़ फ़रमां थे (ये मक्का में एक पहाड़ है) और आप (अ़लैहिस्सलाम) के साथ हज़रत अबू बक्र, हज़रत ऊ़मर, हज़रत ऊ़स्मान, हज़रत अ़ली, हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) थे पस वो पहाड़ (जोशे मसर्रत में) हिलने लगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया (ऐ पहाड़) ठहर जा क्योंकि तेरे ऊपर एक नबी और सिद्दीक़ और शहीद के सिवा कोई नहीं है। (मुस्लिम–सही–6/101-ह०–6247)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1061-ह०–3696)
(इब्ने हिब्बान–सही–8/163-ह०–6983)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत ज़ैद, हज़रत जाअ़फ़र और हज़रत इब्ने र'वाहा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुताअ़ल्लिक़ ख़बर आने से पहले ही उनके शहीद हो जाने के मुताअ़ल्लिक़ लोगों को बता दिया था चुनांचा हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि अब झण्डा ज़ैद ने संभाला हुआ है और अब वो शहीद हो गये और अब जाअ़फ़र ने झण्डा संभाल लिया है और अब वो भी शहीद हो गये हैं और अब इब्ने र'वाहा ने झण्डा संभाल लिया है और अब वो भी शहीद हो गये हैं ये फ़रमाते वक़्त हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की चश्माने मुबारक अश्क वार थी (फिर फ़रमाया) यहाँ तक कि अब अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ख़ालिद बिन वलीद ने झण्डा संभाल लिया है और उनके ही हाथों में अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों पर फ़तह अ़ता फ़रमाई है।
(बुख़ारी–सही–3/218-ह०–2798)
(नसाई–सुनन कुबरा–5/180-ह०–8604)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत जाअ़फ़र और हज़रत ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के शहीद होने से पहले ही उन की शहादत की ख़बर दे दी थी और उस वक़्त आप (अ़लैहिस्सलाम) की आँखों से आँसू जारी थे। (बुख़ारी–सही–3/690-ह०–3630)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत अ़म्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से फ़रमाया जब वो ख़न्दक़ खोद रहे थे तो हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) उनके सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरते और फ़रमाते जाते थे कि ऐ इब्ने सुमय्या तुझ पर बड़ी मुसीबत होगी कि तुझे बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा। (मुस्लिम–6/433–7320)

हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के इरशाद के मुताबिक़ जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अ़म्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) के लश्कर के साथ थे और हज़रत अ़म्मार (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) इस जंग शहीद हुये।

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं हम मस्जिदे नबवी की ताअ़मीर के लिये एक एक ईंट उठाकर ला रहे थे जबकि हज़रत अ़म्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) दो दो ईंटें उठाकर ला रहे थे कि अचानक नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का गुज़र उनके पास से हुआ तो आपने उनके सर से गुबार झाड़ते हुये फ़रमाया कि अफ़सोस अम्मार को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा अ़म्मार उन्हें अल्लाह की तरफ़ दाअ़वत देंगे और वो उन्हें आग की तरफ़ बुलायेंगे (बुख़ारी–3/227-ह०–2812)

मुस्तक़बिल में वाक़ैअ़ होने वाले वाक़्आ़त का इ़ल्मे ग़ैब

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के लोगों को कुरैश का ये ख़ानदान यानी बनू उमइया का ख़ानदान हलाक करेगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि आप हमें क्या हुक्म देते हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उनसे जुदा और अ़लैहदा रहना। (मुस्लिम–सही–5/422–7325)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम यहूद से लड़ोगे और उन्हें क़त्ल करोगे हत्ता कि यहूदी पत्थर या दरख़्त के पीछे छुपेगा तो पत्थर बोलेगा कि ऐ मुसलमान इस पत्थर या दरख़्त के पीछे यहूदी छिपा है इसको मार डालो (ये क़यामत के क़रीब होगा)
(मुस्लिम–सही–5/425-ह०–7339)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुम सफ़ेद पेशानी व सफ़ेद हाथ पाँव के

साथ मेरे पास आओगे और तुम्हारी सफ़ेद पेशानी और हाथ पाँव ये बुज़ू के सबब से होगें और ये मेरी ही उम्मत का निशान होगा और किसी दूसरी उम्मत में ये निशान न होगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/397-ह०–4282)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मेरी उम्मत के मुँह सज्दों की वजह से चमकते होंगे और उनके हाथ वुज़ू की वजह से चमकते होंगे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/371-ह०–607)
(नसाई–सुनन–1/101-ह०–152)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के लोग क़यामत के दिन बुलाये जायेंगे जबकि वुज़ू के निशानात की वजह से उनकी पेशानियाँ और हाथ पाँव चमकते होंगे कि अब जो कोई तुममें से अपनी चमक बढ़ाना चाहे तो बढ़ाये।
(बुख़ारी–सही–1/168-ह०–136)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि जन्नत वालों में तुम लोग–

निस्फ़ होगे यानी सब जन्नतियों में आधी ताअ़दाद सिर्फ़ मुसलमानों की होंगी और बाक़ी निस्फ़ में और सब उम्मतें होगी और इसकी वजह ये है कि जन्नत में वही रुहें जायेंगी जो मुसलमान हैं।
(इब्ने माजा–3/397-ह०–4283)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है वो फ़रमाते हैं कि हम हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के हमराह थे मक्का और मदीना के माबैन फिर आप ने हमें अहले बदर के मुताअ़ल्लिक़ हदीस बयान फ़रमाई पस उन्होंने फ़रमाया कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने हमें कुफ़्फ़ार के साथ लड़ाई शुरु होने से एक रोज़ पहले दूसरे रोज़ क़त्ल होने वाले कुफ़्फ़ारों की जाए हलाकत दिखा रहे थे और आप फ़रमाते जाते थे कि इन्शा अल्लाह कल ये फुलां काफ़िर का मक़्तल होगा और ये फुलां के क़त्ल होने की जगह है हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं उस ज़ात की क़सम जिसने आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया उन कुफ़्फ़ारों के मुताअ़ल्लिक़ आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने जो जगह मुतय्यन फ़रमाई थी वो उन हुदूद से ज़रा भी इधर उधर न गिरे फिर उनको एक दूसरे के ऊपर बदर के कुऐं में डाल दिया गया फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम चले हत्ता कि उनके पास पहुँच गये और फ़रमाया ऐ फुलां इब्ने फुलां क्या तुमने उस वाअ़दे को पा–

लिया जो अल्लाह ने और उसके रसूल ने तुम्हारे साथ किया था तहक़ीक़ कि मैंने उस वाअ़दे को हक़ पाया जो अल्लाह तआ़ला ने मेरे साथ किया है हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप इन मुर्दा कुफ़्फ़ारों के साथ कैसे कलाम फ़रमां रहे हैं जिनके अन्दर रुह नहीं है तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो कुछ भी मैं इनसे कह रहा हूँ तुम इन मुर्दा कुफ़्फ़ारों से ज़्यादा नहीं सुन रहे।

(मुस्लिम–सही–6/403-ह०–7222)

(बुख़ारी सही–4/202-ह०–4026, 2/126-ह०–1370)

(अबू दाऊद–सुनन–3/172-ह०–2681)

(इब्ने हिब्बान–सही–7/501-ह०–6498)

गुमशुदा ऊँट की ख़बरे ग़ैब

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि सुलैह हुदैबिया से वापसी पर एक जगह हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और सहाबा किराम के ऊँट मुन्तशिर हो गये तो सब अपने अपने ऊँट वापस ले आये लेकिन हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ऊँटनी न मिली फिर रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझे इरशाद फ़रमाया कि फुलां जगह से मेरी ऊँटनी ले आओ तो मैंने ऊँटनी को उसी जगह और उसी हाल में पकड़ लिया जैसा कि मुझसे हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया था।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/278-ह०–10548)

क़ब्र के अन्दर वाक़ैअ़ होने वाले अहवाल का इ़ल्मे ग़ैब

➡ हज़रत अ़ब्दुललाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने क़ब्र के अन्दर होने वाले अ़ज़ाब व हालात से बाख़बर होकर फ़रमाया कि इन्हें अ़ज़ाब हो रहा है और वो भी किसी क़बीरा गुनाह के–

सबब नहीं बल्कि ये पेशाब के छींटों से बचने में एहतियात न करने के सबब से है और इनमें से एक तो पेशाब के वक़्त पर्दा तक नहीं करता था और दूसरा चुगलियाँ खाता फिरता था फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने एक सब्ज़ टहनी ली और उसके दो हिस्से करके हर क़ब्र पर एक हिस्सा गाढ़ दिया लोग अ़र्ज़ गुज़ार हुये या रसूलल्लाह आपने ऐसा क्यों किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तक ये टहनिया खुश्क न होंगी तो इनके अ़ज़ाब में तख़फ़ीफ़ (कमी) होती रहेगी।
(बुख़ारी–सही–2/121-ह०–1361)
(बुख़ारी–सही–1/207-ह०–216)
(मुस्लिम–सही–1/405-ह०–677)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/114-ह०–70)
(अबू दाऊद–सुनन–1/105-ह०–20)
(नसाई–सुनन–1/10-ह०–31)

➡हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक दिन गुरुबे आफ़ताब के बाद रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) बाहर तशरीफ़ लाये कि फिर आपने एक हौलनाक आवाज़ सुनी उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यहूद को उनकी क़ब्रों में अ़ज़ाब हो रहा है।
(बुख़ारी–सही–2/128-ह०–1375)
(नसाई–सुनन–1/667-ह०–2063)

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्मे ग़ैब की वुस्अ़त और हक़ीक़त सिर्फ़ रब तआ़ाला ही जानता है कि रब तआ़ाला ने अपने हबीब को कितना इ़ल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया है और हमारे ज़हनी तसव्वुरात उस इ़ल्मे ग़ैब का क़तअ़न इदराक व अंदाजा नहीं कर सकते व कसीर उ़लूमे ग़ैब ऐसे हैं जो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने बाअ़ज़ हिकमतों के तहत बयान नहीं फ़रमाये और बेशुमार उ़लूमे ग़ैब वो हैं जो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने ज़रुरत के तहत बयान फ़रमाये जो कि बेशुमार किताबों में रक़्म हैं अगर आपके बयान फ़रमाये हुये सब उ़लूमे ग़ैब को जमाअ़ किया जाये तो एक निहायत बड़ी व तवील फ़ेहरिस्त की किताब मुरत्तब होगी।

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने क़यामत की बेशुमार निशानियों का मुफ़स्सल बयान फ़रमाया जो कि सारा का सारा इल्मे ग़ैब पर मबनी है जैसे क़यामत के क़रीब ईमान मदीने में सिमट आयेगा और दीन सलामत न रहेगा और मुसलमान का ईमान बचाना गोया हाथ में आग लेना होगा और आदमी सुबह को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर होगा हत्ता कि मस्जिद में कोई मोमिन न होगा और इल्म का उठना, व जहालत का फैलना व बदकारी व शराब नोशी का आ़म होना और मर्दों की क़िल्लत और वक़्त का सिकुड़ना और ज़लज़लों और क़त्ल की कसरत का होना और माल की इन्तिहाई कसरत–

का होना और सूरज का मग़रिब से तुलूअ़ होना व ज़मीन का धंसना और मुसलमानों और तुर्कों की जंग और ज़मीन का जहालत से भर जाना व हुक्म रानों का जुल्म बढ़ना और फ़रात में सोने का पहाड़ निकलना और दरिन्दों का इन्सानों से बात करना और कुर्बे क़यामत मुसलमान के हर ख़्वाब का सच्चा होना व दज्जाल के सब अहवाल व वाक़आ़त व नुजूले ईसा (अ़लैहिस्सलाम) और मेंहदी (अ़लैहिस्सलाम) की आमद व याजूज माजूज का मुफ़स्सल बयान और कुर्बे क़यामत के दीगर जुमला अहवाल बग़ैराह ये सब ग़ैब की ख़बरें हैं।

इसी तरह मुसलमान के क़रीबुल मौत के तमाम अहवाल व कैफ़ियात जैसे नेक व बदकार की मौत की मुख़्तलिफ़ कैफ़ियत व रुह के क़ब्ज़ होने के क़रीब के अहवाल और मल्कुल मौत के रुह निकालने के वक़्त के अहवाल व कैफ़ियात व रुह का तफ़सीली बयान और गुस्ल के वक़्त रुह की निदा व मोमिन व काफ़िर की मौत के जुमला अहवाल व मोमिन की रुह का अर‘वाह की रुहों से मुलाक़ात व खुदखुशी करने वाले के अ़ज़ाब का तफ़सीली बयान व शहादत की मौत का मुफ़स्सल बयान बग़ैराह और ये सब ग़ैब की खबरें हैं।

इसी तरह क़ब्र से मुताअ़ल्लिक़ जुमला अहवाल व कैफ़ियात कि क़ब्र जन्नत का बाग़ है या फिर जहन्नुम का एक गढ़ा है क़ब्र में मुर्दे का जूतों की आवाज़ का सुनना व ज़मीन का इन्सानी

जिस्मों को खाना और क़ब्र के मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब व क़ब्र में सवाल व जवाब व मुर्दों को सुबह शाम उसका ठिकाना दिखाया जाना कि वो जन्नती है या वो दोज़ख़ी है व क़ब में भारी गुर्ज़ से मुर्दे का मारा जाना व क़ब्र में आग का बिस्तर या जन्नत की खुश्बूदार हवा और कब्र में बड़े बड़े सांपों की शक्ल में अ़ज़ाब का मुसल्लत होना और रुह का अपनी क़ब्र की तरफ़ आना और घर वालों के आअ़माल का क़ब्र वालों पर पेश होना बग़ैराह और ये सब ग़ैब की ख़बरें हैं।

इसी तरह अहवाले क़यामत का तफ़्सीली बयान भी ग़ैब की ख़बरें हैं जैसे कि सूर मुँह के क़रीब है और रोज़े क़यामत पहली बार सूर का फूंका जाना और फिर दोबारा सूर का फूँका जाना और फिर ज़हूरे क़यामत व क़ब्रों से उठना और नंगे बदन और बग़ैर ख़त्ना के उठाया जाना फिर मैदाने महशर में जमाअ़ होना व मैदाने महशर की ज़मीन का सफ़ेद होना और रोज़े क़यामत लोगों का मुख़्तलिफ़ सख़्त तरीन व दर्दनाक अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होना और तमाम उम्मत का पुलसिरात से गुज़र होना और आअ़माल नामा दिये जाने का तफ़्सीली बयान व रोज़े हश्र लोगों के मुख़्तलिफ़ अहवाल व कैफ़ियात और सूरज क़रीब व ज़मीन का हमवार और बे साया होना व सात क़िस्म के लोगों का अल्लाह की रहमत के साये में होना व कुफ़्फ़ार का बद तरीन अंजाम और उन पर सख़्त तरीन अ़ज़ाब का मुसल्लत होना व हिसाबो किताब

और आअ़मालों की पुरसिश और नेक लोगों का पर्दे में हिसाबो किताब और माल को साँप की शक्ल में मुसल्लत किया जाना और बेशुमार लोगों को बग़ैर हिसाबो किताब के जन्नत में दाख़िला और बेशुमार लोगों का दोज़ख़ में दाख़िला और मीज़ान का तफ़्सीली बयान और क़यामत के दिन मखूलक़ का तीन जमाअ़तों में तक़सीम होना और हौज़े कौसर का तफ़्सीली बयान व रोज़े क़यामत नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का मक़ाम व इ़ज़्ज़तों इकराम और आपका मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ होना और आप अ़लैहिस्सलाम की शफ़ाअ़त का तफ़्सीली बयान और क़यामत के दीगर मुख़्तलिफ़ अहवाल वग़ैराह और जन्नत व दोज़ख़ के जुमला अहवाल व तफ़्सीली बयान और ये सब ग़ैब की ख़बरें हैं।

अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को ज़मीनो आसमान के तमाम उ़लूम व हिकमतों का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया व लोगों के मख़्फ़ी क़ल्बी अहवाल व कैफ़ियात और तमाम पोशीदा बातों का इ़ल्म और मुनाफ़िक़ीन की हालते निफ़ाक़ व मक्रो फ़रेब का इ़ल्म व अहकामे शरीअ़त और दीनी उमूर का इ़ल्म और माज़ी हाल व मुस्तक़बिल के ज़मानों के अहवाल का इ़ल्म और क़यामत तक ज़ाहिर होने वाले तमाम अहवाल व मख़्फ़ी राज़ों का इ़ल्म यहाँ तक कि आसमानों के ऊपर जो भी मख़्लूक़ात है उन सब का इ़ल्म व ज़मीनों के नीचे जो कुछ भी

मौजूद है उसका इ़ल्म यानी कायनात की हर शैः का इ़ल्म आपको अ़ता किया गया।

आप (अ़लैहिस्सलाम) को इ़ल्मे ग़ैब के ख़ज़ाने अ़ता हुये और कुरान भी आपके इ़ल्मे ग़ैब में शामिल है अल्लाह तआ़ला कायनात की हर शैः का इ़ल्म कुरान मजीद में जमाअ़ फ़रमां दिया व ज़मीनो आसमान में कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जिसका इ़ल्म कुरान में न हो ख़्वाह वो खुश्क हो या तर हो या इन दोनों से मुख़्तलिफ़ हो और ज़मीन व आसमान के जमादात व नबादात और इन्सान व जिन्न और शजर व हजर और जानवर, चरिन्दे परिन्दे और हर जानदार व बेजान शैः व जुमला मख़लूक़ात ख़्वाह ज़मीन के ऊपर हो या ज़मीन के नीचे हो और आसमान के ऊपर हो या आसमान के नीचे इन सब का इ़ल्म कुरान में मौजूद है।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर वो अ़ज़ीम, अज़ली, अबदी, व दायमी, किताब नाज़िल फ़रमाई जो कुल कायनात की हर ज़ाहिर व पोशीदा, ज़मीनी व आसमानी, अ़र्शी व फ़र्शी, इन्सानी व हैवानी, मलाकूती व जिन्नाती व रुहानी व अव्वली व आख़िरी, शरीअ़त की, तरीक़त की, हक़ीक़त की, माअ़रिफ़त की, दीनी व दुनियाँ की, हराम व हलाल इ़ल्म व अ़क़्लो फ़हम, आअ़माल व अक़ायद ग़रज़ ये कि कायनात की तमाम चीज़ों का बयान व इज़हार लेकर आने वाली किताब है

और कुल कुरान आपके इ़ल्म में है "(वो) रहमान ही है जिसने (खुद अपने प्यारे हबीब को) कुरान सिखाया। (सू०–रहमान–55/1,2) "और आप को वो सब इ़ल्म अ़ता कर दिया जो आप नहीं जानते थे और आप पर अल्लाह का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है (सू०–निसा–4/113)

आप (अ़लैहिस्सलाम) ने तमाम मख़्लूक़ात की इब्तिदा से लेकर इन्तिहां तक की ख़बर दी हत्ता कि क़ब्र से दोबारा उठने और क़यामत के तमाम अहवाल और लोगों जन्नत व दोज़ख़ में जाने की ख़बर और जो कुछ हो चुका है व जो कुछ होने वाला है उसका वाज़ेह बयान फ़रमाया आप (अ़लैहिस्सलाम) को ये भी इ़ल्म था कौन सी मख़्लूक़ कब और कैसे पैदा हुई और दुनियाँ में कितना अ़रसा रही और उनके क्या आअ़माल थे और उनका क्या अंजाम हुआ और नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को अल्लाह तआ़ला ने ये भी इ़ल्म दिया था कि कौन जन्नती है और कौन दोज़ख़ी है और क़यामत तक वाक़ेअ़ होने वाले तमाम उमूर की ख़बर दी।

वल्लाहु तआ़ला अ़ालमू व रसूलुहु अ़ालम०

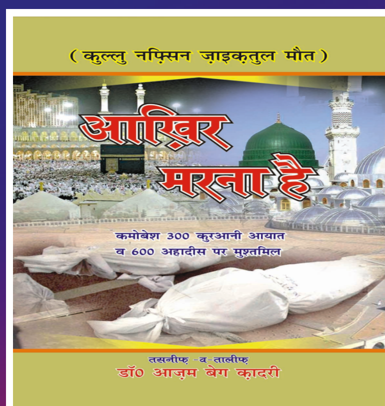
व आख़िरुद्दअ़वाना अ़निल ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन०

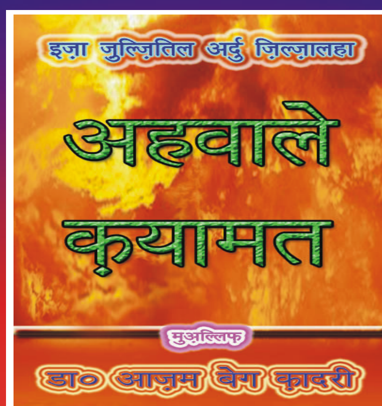


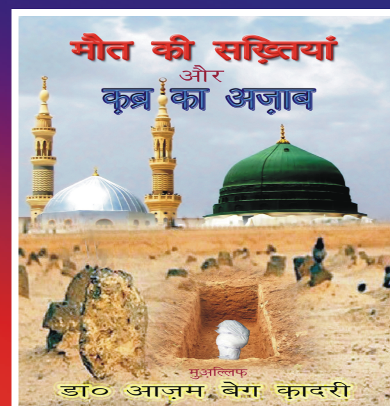
अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इनायत व रहमो करम और उनके तुफ़ैल और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलिया किराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से मैंने इस किताब की ताअ़लीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था

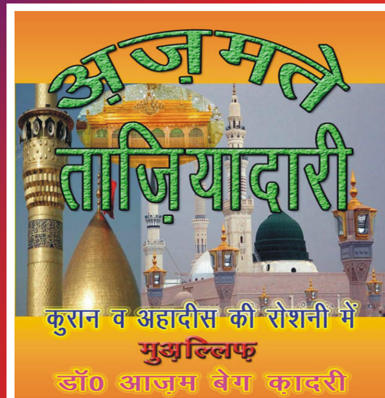
अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे व मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर व मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन**

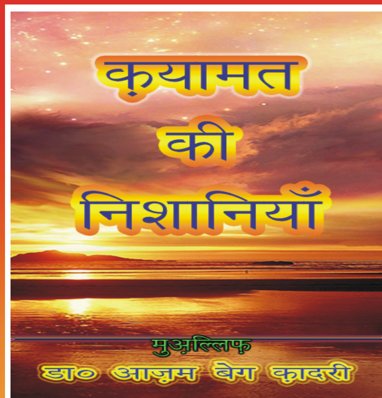
इस किताब को बराहे ईसाले सवाब मेरे वालिदे गिरामी जनाब ईद मुहम्मद साहब क़िब्ला की रुह को अल्लाह तआ़ला अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये और अपने प्यारे हबीब के सद्क़े व तुफ़ैल उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन** .....★★★★★


(कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत)
आख़िर मरना है
कमोबेश 300 कुरआनी आयात
व 600 अहादीस पर मुश्तमिल
तसनीफ़ -व-तालीफ़
डॉ0 आज़म बेग क़ादरी


इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल अर्दु ज़िल्ज़ालहा
अहवाले क़यामत
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


मौत की सख़्तियां
और
क़ब्र का अज़ाब
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


अ़ज़मते ताज़ियादारी
कुरान व अहादीस की रोशनी में
मुअ़ल्लिफ़
डॉ0 आज़म बेग क़ादरी


क़यामत
की
निशानियाँ
मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


शाने औलिया
व
ज़ियारते कुबूर
(औ़रतों का क़ब्रों की ज़ियारत करना जाइज़ है)
(नियाज़ व फ़ातिहा दिलाना सुन्नत है)
मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी


अत्तलाकु मर्रातानि फ़इमसाकुम बिमअ़रुफ़िन औतस्रीहुम बिइह़सान०
तीन तलाक़
का
शरई ह़ल
• कुरान व अह़ादीस की रोशनी में
• एक मजलिस की तीन तलाक़ें ह़राम हैं
• एक वक़्त में तीन तलाक़ें देने पर
एक ही वाक़ैअ़ होती है
मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी
09897626182


शाने मुस्तफ़ा
कुरान व
अहादीस में
मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


क़व्वाली
जाइज़
है
(सिमाअ़ बिल मज़ामीर)
मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


मीलाद मनाना
ऐ़न
ईमान है
मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


हयाते सय्यदुल अम्बिया
और
अक़ीदा हाज़िर व नाज़िर
मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


वब्तग़ू इलैहिल वसीला
वसीला
वाजिब
है
ख़्वातीन का ज़ियारते कुबूर जाइज़ है
नियाज़ व फ़ातिहा देना सुन्नत है
मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी